₹ २०

ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

अग्रहायण २०७५ दिसम्बर २०१८

दाँत किटकिटी बजा रहे हैं
ठिठुरन से थिरकन तन छायी
ऊनी कपड़े मिले सजीले
बच्चे बोले सर्दी आयी

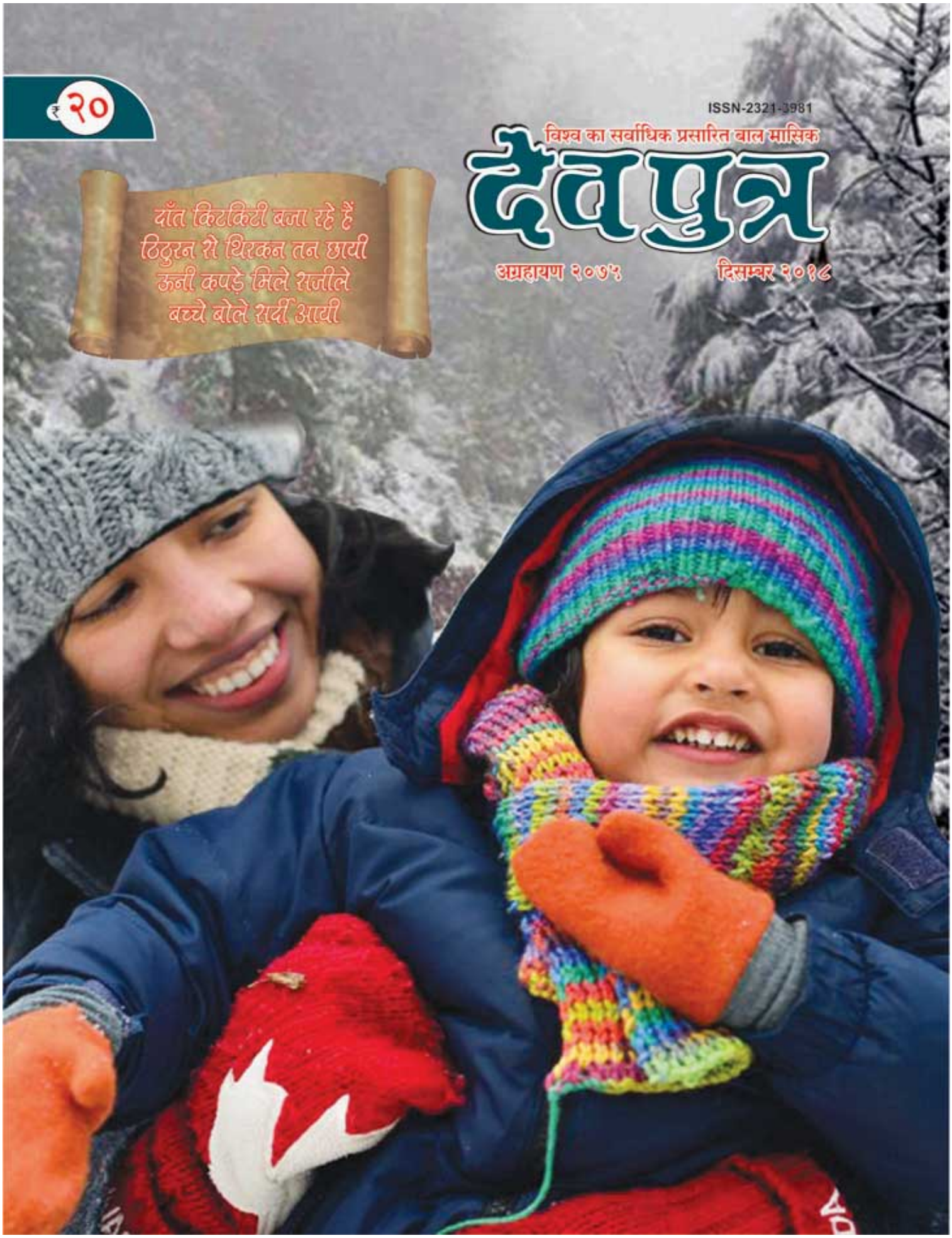

दृष्टि The Vision

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल सेवा और राज्य सेवा (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड पी.सी.एस.) परीक्षाओं की पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन
(प्रारंभिक परीक्षा)
(20 बुकलेट्स) ₹10,000/-

सामान्य अध्ययन
(मुख्य परीक्षा)
(27 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रारंभिक परीक्षा)
(20 + 9 = 29 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹15,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(31 + 3 + 8 = 42 बुकलेट्स) ₹17,500/-

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)
₹7,000/-

इतिहास (वैकल्पिक विषय)
₹7,000/-

दर्शन शास्त्र (वैकल्पिक विषय)
₹6,000/-

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(32 + 10 बुकलेट्स) (₹15,500/-)

सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(32 बुकलेट्स) (₹14,000/-)

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹10,500/-

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(25 बुकलेट्स) ₹10,000/-

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

For UPSC CSE (in English Medium)

Self Learning Modules

- Prelims (18 GS + 3 CSAT Booklets) ₹10,000/-
- Mains (18 GS Booklets) ₹11,000/-
- Prelims + Mains (36 GS + 3 CSAT Booklets) ₹15,000/-

Invitation Offer

- *Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs Today magazine with every module.*
- *Free Test Series worth ₹6000 for UPSC CSE Prelims 2019 with Prelims+Mains module.*
- *Flat 50% discount on Test Series worth ₹6000 for UPSC CSE Prelims 2019 with Prelims/Mains module.*

हिन्दी साहित्य

(2014 के बाद पहला लाइव बैच)
द्वारा डॉ. विकास दिव्यकीर्ति
ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ **3 दिसंबर**
प्रातः 11:30 बजे

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ
11 दिसंबर
प्रातः 11:30 बजे

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485519, 8448485520, 87501-87501

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

अग्रहायण २०७५ ▪ वर्ष ३९
दिसम्बर २०१८ ▪ अंक ६

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

विगत दिनों अमेरिका के एक बड़े उद्योगपति का बड़ा रोचक प्रसंग पढ़ने को मिला। हुआ यूं कि उस उद्योगपति ने अचानक सामाचार पत्रों और टीवी चैनल पर घोषणा की कि वह अपनी सबसे कीमती कार, जो कई करोड़ की कीमत की थी, को दफनाएगा। उसने कारण बतायाा कि वह मृत्यु के बाद भी उस कार का उपयोग करना चाहता है इसलिए वह ऐसा कर रहा है।

पूरे देश में एक बहस चल पड़ी। लोगों ने उसे मूर्ख सिद्ध किया। मृत्यु के बाद कार का क्या उपयोग भला? इतनी मूल्यवान कार को जमीन में गाड़ने के बजाय किसी आवश्यकता वाले व्यक्ति को दान कर दें तो कम से कम कुछ तो उपयोग होगा। परन्तु उद्योगपति तो अड़ गए अपनी बात पर।

अन्ततः कार दफनाने का दिन आ गया। अमेरिका का प्रिन्ट मीडिया, इलेक्टॉनिक मीडिया एकत्र था। हजारों लोगों की भीड़ थी और तब उद्योगपति अपनी नई कार लेकर उस बड़े गड्ढे के पास आए। कैमरों के मुँह उनकी ओर घूमते ही उन्होंने धीरे से गंभीर स्वर में कहा– ''आपको क्या लगता है मैं इतना मूर्ख हूँ कि करोड़ों की कार को दफन कर दूंगा। किन्तु यह सब नाटक मैंने इसलिए किया कि मैं दुनिया को संदेश दे सकूं कि आप सब इस कार से बहुमूल्य अपने शरीर को इसी तरह दफन कर देते हैं। यदि हम सब अपने नेत्र, त्वचा, अंग अथवा पूरी देह को चिकित्सा विज्ञान को दान कर दें तो इससे कितने लोगों को नया जीवन प्राप्त हो सकेगा? मेरी आप सबसे विनम्र प्रार्थना है कि आप सब अपने शरीर का मूल्य पहचानें और मृत्यु के पश्चात् इससे लोगों के जीवन में प्रकाश पैदा करें।''

पूरा देश हतप्रभ था परन्तु उनका यह तरीका लाखों करोड़ों लोगों को एक सकारात्मक संदेश दे गया। इस प्रसंग को पढ़कर हम कोई संकल्प लेंगे क्या?

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- यह तस्वीर किसकी है - विष्णु प्रभाकर ०५
- सच्चा मित्र - पवन कुमार वर्मा १०
- लीना का गणित - चेतना उपाध्याय २६
- महिमा तुम महान हो - विजयकांता मिश्रा ३८
- अतिथि देवो भव - कमला प्रसाद चौरसिया ४८

प्रसंग

- गणिती मित्र - शंतनु रघुनाथ शेण्डे ०८
- निशाने पर पेट - शैवाल सत्यार्थी १३
- सादगी की मूर्ति - कैलाश जैन २२
- वेशभूषा में क्या रखा है - डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी ३६
- महामना मदनमोहन... - रेणु घोष ४१
- पानी होता तो दाल... - नितेश नागोता ४१

लघु कहानी

- चिड़िया की सीख - किशनलाल शर्मा ०९

आलेख

- महान गणितज्ञ... - डॉ. चक्रधर 'नलिन' १२
- परमवीर चक्र विजेता... - विजय सिंह माली ३१

कविता

- राजेन्द्र प्रसाद - विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनादे' १४
- जीवनभर विद्यार्थी - डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी १७
- ध्रुव - आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर ४३

संवाद

- कहानी कहावत की - शंकरलाल माहेश्वरी १५

चित्रकथाएँ

- मोहित की शरारत - देवांशु वत्स २१
- बहाने का असर - देवांशु वत्स २५
- भोलू का भोलापन - संकेत गोस्वामी ३४

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १६
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा' १८
- गाथा वीर शिवाजी की (२३) - २३
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३७
- पुस्तक परिचय - ४२
- आपकी पाती - ४३

बाल प्रस्तुति

- अभ्यास का महत्व - शशांक देव सिंह ३३
- डब्बू गीदड़ - कृष्णकांत महते ४४

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!
देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है-
खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास**
बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर**
खाता क्रमांक - **53003592502**
IFSC- **SBIN0030359**
राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए।
नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है।
उदाहरण के लिए -
सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए -
"**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

यह तस्वीर किसकी है?

कहानी : विष्णु प्रभाकर

एक लड़की थी। नाम था उसका नीना। वह विद्यालय पढ़ने जाती थी। कुछ विषयों में वह बहुत अच्छी थी, कुछ में साधारण, लेकिन गणित में वह बहुत कमजोर थी। आसान से आसान सवाल भी वह नहीं कर सकती थी। हमेशा उसकी रिपोर्ट खराब रहती थी।

ऐसे ही एक अवसर पर जब वह विद्यालय से लौटी तो बहुत उदास थी। उसके पिता ने उसे देखा और एकदम कहा, ''क्या बात है? क्या आज भी गणित में खराब अंक मिले हैं?''

नीना ने डरते-डरते उत्तर दिया- ''जी हाँ, पिताजी!'' और वह डांट खाने तथा पिटने को तैयार हो गई। हमेशा ऐसा ही होता था। उसे खराब अंक मिलते थे और उसके पिता उसे पीटते थे। जब कभी वे उसे हिसाब समझाने के लिए बैठते तब तो बस उसकी मुसीबत बन जाती थी। पिटते-पिटते बेचारी अधमरी हो जाती और जो कुछ भी थोड़ा बहुत उसकी समझ में आता था, वह भी भूल जाती। उस दिन भी यही हुआ। डांट डपट के बाद पिता ने कहा- ''अच्छा एक सवाल देता हूँ। अगर तुमने उसका ठीक जवाब दे दिया तो ठीक है, नहीं दिया तो कड़ी सजा मिलेगी।'' सवाल ऐसा था- एक आदमी के पास पांच घोड़े और दस गधे हैं। उन सबकी कीमत पंद्रह सौ रुपए है। अब बताओ, एक घोड़े और एक गधे की कीमत क्या होगी, जबकि

सभी घोड़ों की कीमत सभी गधों के बराबर है। सवाल बहुत आसान था। कुल कीमत को दो से भाग कर दो। एक भाग साढ़े सात सौ रुपए घोड़ों की कीमत। दूसरा भाग साढ़े सात सौ रुपए गधों की कीमत। घोड़े हैं पांच। पांच से साढ़े सात सौ को भाग दो। आए एक सौ पचास यानी एक घोड़े की कीमत एक सौ पचास रुपए। गधे हैं दस। दस से सात सौ पचास को भाग दो। आए पचहत्तर रुपए, यानी एक गधे की कीमत हुई पचहत्तर रुपए। लेकिन नीना की समझ में यह सवाल नहीं आया। बहुत देर तक सिर झुकाए हल करती रही, रोती रही, पर सही हल नहीं मिला। सोचने लगी, मेरी समझ में कुछ नहीं आता। मैं क्या करूं? अच्छा थोड़ी देर चित्र ही बनाए जाएं।

नीना को सचमुच चित्र बनाने का बड़ा शौक था। अंक भी उसे बहुत अच्छे मिलते थे। बस उसने गणित की कॉपी उठाकर अलग रख दी और एक कागज पर पेंसिल से रेखाएं बनाने लगी। पहले उसने एक बहुत सुंदर सी चिड़िया बनाई, फिर कुछ फूल बनाए। उसके बाद उसने एक आदमी की तस्वीर बनाई। उसे देखकर वह स्वयं बड़े जोर से हंस पड़ी।

उसकी वह हंसी उसकी माँ ने सुनी। डांट पड़ने के कारण वह बहुत परेशान थी, लेकिन वह यह भी चाहती थी कि नीना हिसाब में होशियार हो जाए। आखिर वह हिसाब नहीं जानेगी तो आगे की पढ़ाई कैसे होगी? कैसे वह डॉक्टर या इंजीनियर बनेगी? लेकिन अब जब उसने नीना की हंसी सुनी तो वह चौंक पड़ी। वह जल्दी जल्दी उसके पास आई। उसे आते देखकर नीना ने झटपट वह कागज छिपा दिया। माँ ने पूछा, सवाल कर लिया?

नीना ने उत्तर दिया, ''मेरी समझ में नहीं आता'' माँ आखिर माँ ही थी। नीना को बहुत प्यार करती थी। वह उसके पास बैठ गई और उसे बताने लगी कि वह सवाल कैसे हल करना चाहिए। वह बोलती गई और नीना लिखती गई। अंत में माँ ने कहा, ''बेटी अच्छी तरह समझ लो। मैं तुम्हारे सवाल कब तक हल करती रहूंगी? तुम्हे अपने आप अपना काम करना चाहिए। अच्छा, वह कागज तो दिखाओ, जो तुमने वहां छिपा दिया।'' नीना एकदम घबरा गई। उसने उस कागज को और भी छिपाने की कोशिश की, लेकिन वह माँ की नजर से नहीं बच सका। उसने उस कागज को देखा। धीरे-धीरे उसके चेहरे पर मुस्कराहट फैलती गई। बोली, ''ये तुमने बनाए हैं? तुम तो अच्छे खासे चित्र बना लेती हो और यह बड़ी बड़ी आँखों वाला आदमी कौन है? क्या यह तुम्हारे पिताजी हैं?'' नीना ने शर्म से सिर झुका लिया। माँ फिर मुस्कराई। बोली, ''इसमें शरमाने की क्या बात हैं? तुम्हें शौक है तो तुम चित्र बना सकती हो, लेकिन तुम्हें सवाल समझने की भी कोशिश करनी चाहिए।'' बात यहीं समाप्त नहीं हुई। नीना चुपचाप चित्र बनाती रही और सवाल भी हल करती रही, लेकिन सवाल थे कि उसकी समझ में कम ही आते थे। हाँ, चित्र की भाषा वह बहुत अच्छी तरह समझ लेती थी। उसी की सहेलियां उसका मजाक उड़ाती। विद्यालय में अब बहन जी उसे चिढ़ातीं। घर पर पिताजी उसे डांटते। छोटे भाई बहन भी उसकी खिल्ली उड़ाने से नहीं चूकते थे। वह भी बहुत दुखी होती, लेकिन जैसे ही वह कागज पर पेंसिल से रेखाएं खींचने लगती, सब बातें भूल जाती और उन रेखाओं में तरह-तरह की तस्वीरें चमक उठतीं। वह उन्हें किसी को दिखाती नहीं थी। बस उसकी माँ ही इस बात को जानती थी। एक दिन उसने बड़े प्यार से नीना से कहा-''नीना बेटी, एक सप्ताह बाद चित्र बनाने की प्रतियोगिता होगी। तुम उस प्रतियोगिता में भाग क्यों नहीं लेती?''

नीना यह सुनकर बहुत खुश हुई। लेकिन वह डर भी रही थी। उसने कहा, पिताजी नहीं जाने देंगे माँ। माँ बोली, अभी पिताजी को कहने की जरूरत नहीं है। तुम मेरे साथ चलना'' और सचमुच नीना ने उस प्रतियोगिता में भाग लिया। कई घंटे से रेखाएं खींचती रही। उनमें रंग भरती रही। जब वह लौटी तो बहुत खुश थी, लेकिन इस खुशी की बात उसने किसी को भी नहीं बताई, क्योंकि वह डरती थी। इसी तरह कई महीने बीत गए। वह सवाल हल करती रही, डांट खाती रही। फिर रेखाएं खींचती रही।

फिर रेखाएं खीचती रही। फिर एक दिन एक मोटा सा लिफाफा नीना के नाम आया। उसके पिताजी ने उसे खोलकर पढ़ा। एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा, तीन बार पढ़ा। उन्हें विश्वास ही नहीं आ रहा था। पत्र में लिखा था कि प्रतियोगिता में सबसे सुंदर चित्र बनाने के लिए दस बच्चों को पारितोषिक दिया जाएगा। नीना उनमें दूसरे नंबर पर आई है। आगामी १५ दिसम्बर को स्वयं प्रधानमंत्री पारितोषिक बांटेंगे। उस दिन नीना को अपने माता–पिता सहित ठीक समय पर पहुँच जाना चाहिए। उसके पिताजी ने एक बार फिर उस पत्र को अच्छी तरह से पढ़ा। फिर उनकी आँखों में आंसू तैर आए। उन्होंने नीना को बुलाकर उसे छाती से लगा लिया। उसकी पीठ ठोंकी और मन ही मन उसने माफी भी मांगी ली। फिर चिल्लाकर उसकी माँ से कहा, ''अरे सुनती हो! कहां हो तुम? यहां आकर देखो, हमारी नीना चित्रकार बन गई है।''

माँ दौड़ी–दौड़ी आई और हंसती हुई बोली, मुझे सब मालूम है। वह तो कभी की चित्रकार बन चुकी है। जरा देखो तो यह किसकी तस्वीर है? और उसने वह कागज जो पहले दिन नीना की मेज से उठाया था, उनके हाथ में दे दिया। उन्होंने उसे देखा। यह तो एक आदमी की तस्वीर है। क्या इसकी शक्ल मुझसे नहीं मिलती? वह सब कुछ समझ गए, लेकिन उन्हें गुस्सा नहीं आया। मुस्कराकर बोले, ''क्या प्रतियोगिता में भी मेरा ही चित्र बनाया?''

नीना ने शरमाते हुए जवाब दिया, ''आपका भी, माँ का भी और अपना भी।'' उन्होंने एकदम कहा, ''तब मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा।'' लेकिन वह गए और बड़े गर्व के साथ गए। आज भी उनके कमरे में वह चित्र टंगा हुआ है जिसमे प्रधानमंत्री नीना को पुरस्कर देकर उसकी पीठ थपथपा रहे हैं और सब लोग तालियां बजा रहे हैं, पिताजी भी और माँ भी।

और सबसे अच्छी बात यह हुई अब गणित के सवाल भी नीना की समझ में आने लगे हैं।

(लेखक हिन्दी साहित्य के महान साहित्यकार है।)

ज्यामिती पहेली

● राजेश गुजर

बच्चो, नीचे बने चित्र में ज्यामितीय आकृतियाँ वर्ग, चतुर्भुज एवं षट्भुज कितनी हैं? गिनकर बताओ।

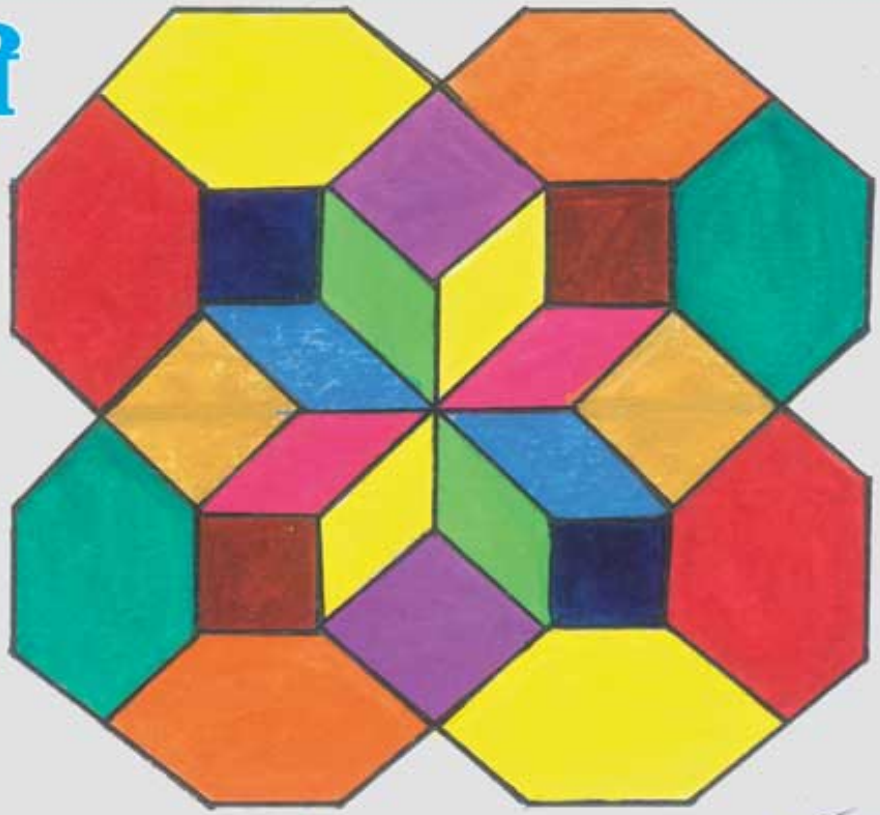

(रा. गणित दिवसः २२ दिसम्बर)

महान गणितज्ञ रामानुजन् का सच्चा

गणिती मित्र

प्रसंग : शंतनु रघुनाथ शेण्डे

रामानुजन् का कोई सच्चा मित्र न था, या बहुत कम मित्र थे। एक दिन एक व्यक्ति ने उन्हें इसका कारण पूछा। रामानुजन् ने उत्तर दिया– वह ऐसे दोस्त बनाना चाहते थे लेकिन उनकी कल्पना के अनुसार कोई नहीं मिला।

उस व्यक्ति ने फिर पूछा– आप के योग्य दोस्त ना मिला– तो आप कौनसी योग्यता चाहते थे? जब थोड़ा आग्रह कर पूछा तो रामानुजन् ने उत्तर दिया– संख्या २२० और २८४ जैसा।

व्यक्ति असमंजस में पड़ा और उसने प्रतिप्रश्न किया–सच्चा मित्र होना और इन संख्याओं में क्या सम्बन्ध हैं?

रामानुजन् ने उन्हें कहा इन संख्याओं की भाजक संख्या निकाले इन संख्याओं की भाजक संख्यायें हैं–

२२०=१,२,४,५,१०,११,२०,२२,४४, ५५,११०,२२०

२८४= १,२,४,७१,१४२,२८४

रामानुजन् ने आगे कहा इन में से २२० और २८४ संख्या में छोड़ दो और बाकी बचे भाजकों का जोड़ करो।

उस व्यक्ति ने ऐसा किया तो आश्चर्यचकित हो गया। आप भी देखें–

१+२+४+५+१०+११+२०+२२+४४ +५५+११०=२८४

१+२+४+७१+१४२=२२०

रामनुजन् ने बताया– आदर्श मित्रता इन दो संख्याओं की तरह होनी चाहिए। यदि एक अनुपस्थित रहा तो दूसरा उसका स्थान लेकर पूर्ति करें।

ऐसे महान गणितीय मन और बुद्धिमान रामानुजन् को शतशः वन्दन। जिनके कारण ही महान गणितज्ञों की सूची में वे शीर्ष स्थान मंडित कर रहें हैं।

(३ दिसम्बर : विद्यार्थी दिवस)

चिड़िया की सीख

लघु कहानी : किशनलाल शर्मा

''तुमने पाठ याद क्यों नहीं किया?''

विज्ञान के शिक्षक ने सभी बच्चों को पाठ छः के सभी प्रश्नों के उत्तर याद करके आने को कहा था। सब बच्चे तो याद करके आये थे। लेकिन जतिन को प्रश्नों के उत्तर याद नहीं थे। इसलिए शिक्षक ने डांटा था।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ था। जतिन के साथ ऐसा रोज होता था। जतिन याद करने का प्रयास तो करता था, लेकिन उसे याद नहीं होता था। इसलिए उसे आये दिन कक्षा में शिक्षक की डांट खानी पड़ती थी।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वह रोज पड़ने वाली शिक्षक की डांट से कैसे बचे? विद्यालय में छुट्टी होने पर वह घर आ गया। घर आकर खाना खाया फिर बस्ता लेकर कमरे में पढ़ने बैठ गया।

''चि...चि...चि...।''

जतिन किताब खोल रहा था, तभी उसे चिड़िया की आवाज सुनाई पड़ी। उसने देखा चिड़िया चोंच में एक तिनका दबाकर लाई थी। उसने तिनका रोशनदान में रखा, लेकिन तिनका नीचे गिर गया। चिड़िया उड़कर नीचे आई। उसने तिनका चोंच से उठाया और फिर उड़ गई। उसने तिनका रोशनदान में रखा, लेकिन तिनका फिर नीचे गिर गया था।

''दीदी! चिड़िया क्या कर रही है?'' जतिन की बहन लता कमरे में बैठी स्वेटर बुन रही थी।

''घोंसला बना रही हैं।''

जतिन चिड़िया को देखने लगा। चिड़िया तिनका रोशनदान में रखती थी। वह नीचे गिर जाता था। चिड़िया उड़कर नीचे आती, तिनका चोंच में उठाती, फिर उड़कर ऊपर जाती। बार-बार प्रयास करने के बाद, चिड़िया तिनके को रोशनदान में रखने में सफल हो गई थी। फिर वह दूसरा तिनका लेने चली गई।

जतिन ने देखा। चिड़िया जब तक तिनका रोशनदान में रख नहीं देती थी। तब तक हार नहीं मानती थी। चिड़िया को देखकर जतिन के मन में विचार आया। दृढ़ इच्छा शक्ति रखकर परिश्रम करने से सफलता जरूर मिलती है।

चिड़िया से सीख का असर पड़ा। अब जतिन को शिक्षक की डांट नहीं खानी पड़ती। उसे सब याद हो जाता है।

● आगरा (उ.प्र.)

सच्चा मित्र

कहानी: पवन कुमार वर्मा

प्रणय और शिवांश की मित्रता के बारे में सभी जानते थे। दोनों एक ही कक्षा में पढते थे। दोनों के घर भी पास-पास थे। प्रणय शांत एवं गम्भीर स्वभाव का था, जबकि शिवांश चंचल स्वभाव का था।

दोनों के सब कार्य साथ-साथ होते थे। साथ पढ़ना, साथ खेलना। शिवांश को अपने स्वभाव के कारण कई बार परेशानियाँ का सामना करना पड़ा था, लेकिन प्रणय ने अपनी सूझबूझ से हमेशा उसे बचा लिया। फिर भी शिवांश के स्वभाव के कोई परिवर्तन नहीं होता।

एक दिन दोनों मित्र समय पर विद्यालय पहुँचे। प्रार्थना के बाद सभी अपने कक्षाओं में चले गए। पहली कक्षा प्रारम्भ होने वाली थी। सभी बच्चे इसकी तैयारी में व्यस्त थे।

शिवांश को शरारत करने की सूझी। उसने अपने ही एक साथी की पानी की बोतल छीनी और उसे दूसरे की ओर उछाल दिया। दूसरे ने बोतल तीसरे की ओर उछाल दिया। फिर तो एक खेल शुरू हो गया। धीरे-धीरे इस खेल ने इतनी गति पकड़ ली कि किसी को कुछ होश ही नहीं रहा। शिवांश के पास बोतल आते ही उसने अपने दूसरे साथी की ओर उछाला, लेकिन दुर्भाग्य से वह उसे पकड़ न सका।

बोतल सीधा सामने लगी खिड़की के काँच से जा टकराया। तेज आवाज के साथ काँच चकनाचूर हो गया। काँच टूटते ही कक्षा में सन्नाटा छा गया।

आवाज सुनते ही आसपास खड़े कुछ अध्यापक तेजी से उस कक्षा में आये। टूटे काँच को देखकर उन्हें सब समझ में आ गया।

''यह किसने किया है?'' उनमें से एक अध्यापक ने क्रोध में पूछा। सभी चुपचाप बैठे रहे।

''जब तक यह पता नहीं चलता कि किसने कांच तोड़ा है, तब तक पढ़ाई प्रारम्भ नहीं होगी।'' दूसरे अध्यापक ने भी कड़ी आवाज में कहा। कोई प्रतिक्रिया न होने पर एक

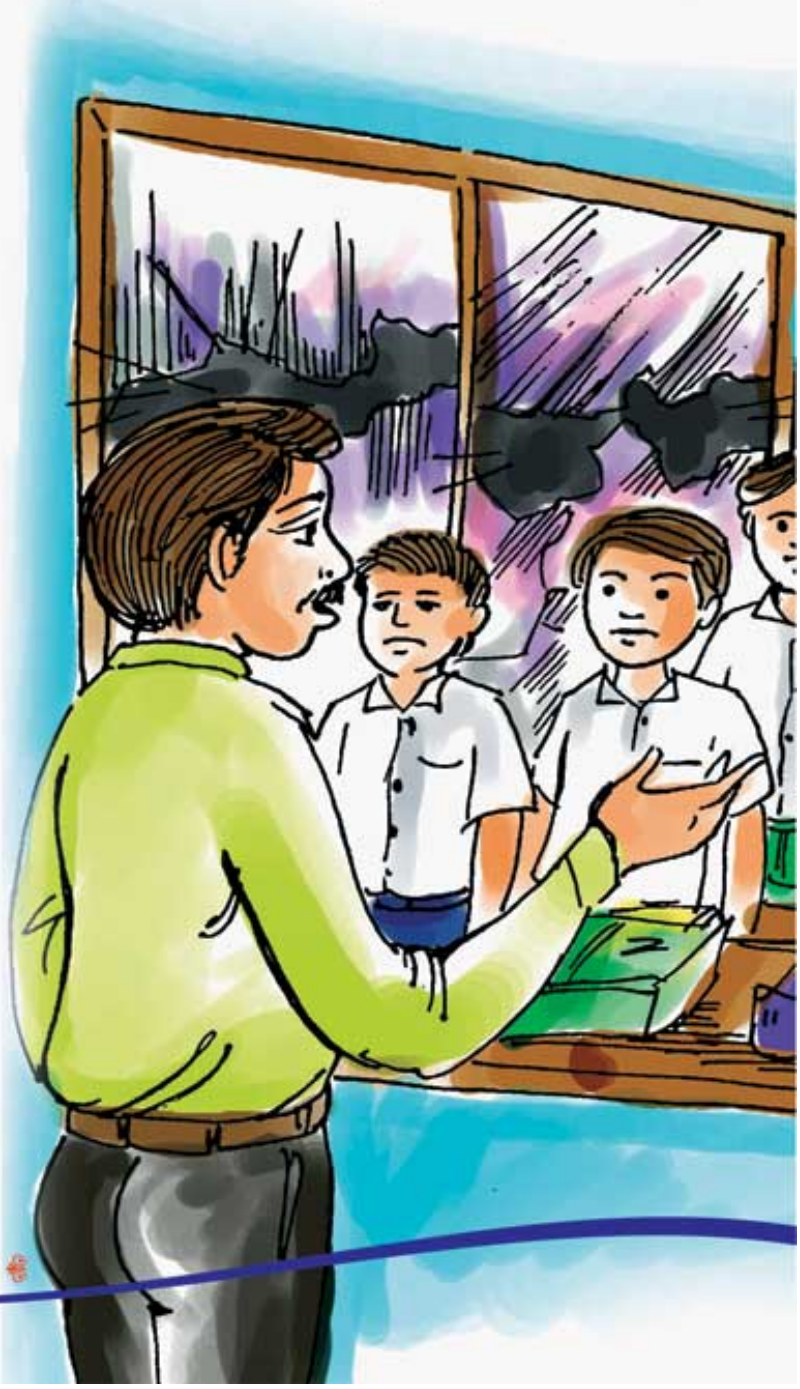

अध्यापक ने शिवांश को ही खड़ा करके पूछा– ''तुम बताओ कांच किसने तोड़ा है?'' वह सिर झुकाये खड़ा रहा।

इस पर अध्यापक ने कहा– ''अगर तुमने काँच तोड़ने वाले का नाम नहीं बताया तो मैं यह मान लूँगा कि तुमने ही काँच तोड़ा है। फिर प्रधानाचार्य से तुम्हारी शिकायत होगी और तुम्हे ही दण्ड भुगतना होगा।'' इसके लिए उसे एक दिन का समय भी दे दिया गया। उस दिन कोई पढाई भी नहीं हुई।

शाम को दोनों मित्र साथ घर लौट रहे थे। शिवांश चुपचाप था। उसे चुपचाप देखकर प्रणय बोला– ''देखा! शैतानी करने वाला कभी न कभी ऐसी मुसीबत में पड़ ही जाता है। मैं तुमसे कहता था न कि शैतानी मत करो लेकिन तुम तो।''

शिवांश का घर पास आ चुका था। उसने प्रणय से कहा– ''मुझे किसी तरह से बचा लो। मैं तुमसे वादा करता हूँ कि अब कभी शैतानी नहीं करूँगा।''

प्रणय ने उसको मदद का अश्वासन दिया। देर रात तक उसने अपने मित्र को बचाने के बारे में सोचता रहा। अंत में उसके मन में एक विचार आया।

अगले दिन दोनों मित्र विद्यालय साथ–साथ निकले। शिवांश दुखी था। तब प्रणय ने उसे समझाया कि पहले उसे अपनी गलती स्वीकार करनी होगी। तभी वह उसकी मदद करेगा। शिवांश इसके लिए तैयार हो गया।

कक्षा में पहुँच कर प्रणय ने अपने साथियों को कुछ समझाया। नियत समय पर अध्यापक कक्षा में आये। आते ही उन्होंने फिर से काँच तोड़ने वाले का नाम पूछा। शिवांश अपने स्थान पर खड़ा हुआ और बोला–''मैंने ही काँच तोड़ा है।''

तभी प्रणय भी अपने स्थान पर खड़ा हो गया और बोला– काँच इसने नहीं मैंने तोड़ा है।'' उसके इतना कहते ही कक्षा के सारे के सारे बच्चे धीरे–धीरे खड़े हो गए। सब के सब एक स्वर में बोल पड़े कि काँच उनने तोड़ा है।

अध्यापक को सारी बातें समझते देर नहीं लगी। वे प्रणय की ओर देखकर मुस्कराये। सभी बच्चों ने अपने अध्यापक से क्षमा मांगी और भविष्य में ऐसी गलती न करने का वादा किया। इस घटना के बाद शिवांश ने भी शैतानी न करने का प्रण ले लिया।

● गाजीपुर (उ.प्र.)

महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन्

आलेखः डॉ. चक्रधर नलिन

गणित के इतिहास में जिस महापुरुष का नाम अति आदर और श्रद्धा से लिया जाता है वह हैं भारतीय वैज्ञानिक श्रीनिवास रामानुजन। अपने ३२ वर्ष के लघु जीवन में उन्होंने गणित के क्षेत्र में जो अभूतपूर्व कार्य किया वह एक उदाहरण है। उनकी गणना विश्व के महान गणितज्ञों में होती है। भारत को अपने इस महान सपूत पर गर्व है।

श्रीरामानुजन का जन्म २२ दिसम्बर, १८८७ को तमिलनाडू प्रांत के इरोड कस्बे में हुआ। उन्होंने दस वर्ष की आयु में प्राथमिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। गणित विषय में पूर्ण अंक पाकर इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की। वह गणित के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग और शोध करते रहते। अन्य विषयों में उनकी उतनी रुचि नहीं थी जितना गणित में। अन्य विषयों में असफल होने पर भी वह कभी निराश नहीं हुए। उनका गणित अनुराग उनकी सफलता का केन्द्र बिन्दु बना। रामानुजन प्रश्नों के माध्यम से कठिन प्रश्न हल करने में बहुत प्रवीण थे। उनके प्रश्नों को सुनकर बहुधा उनके अध्यापक भी निरुत्तर हो जाते थे।

रामानुजन प्रतिभावान पुरुष थे। विज्ञ पुरुषों से जानकारी मिली कि प्राध्यापक जी.एच.हार्डी (इग्लैंड) विश्व प्रसिद्ध गणितज्ञ हैं। उन्होंने प्रो. हार्डी से सम्पर्क किया तो जानकारी हुई कि कुछ ऐसे भी गणित के प्रश्न हैं जो अब तक हल नहीं हो सके। इस जानकारी के पश्चात उन्होंने इन्हें हल कर लिए। इससे प्रो. हार्डी बहुत प्रसन्न हुए और रामानुजन् की प्रतिभा से बहुत प्रभावित एवं चकित हो गए।

प्रो. हार्डी ने इन्हें कैम्बिज विश्वविद्यालय आने का निमंत्रण दिया पर कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वह तत्काल इग्लैंड न जा सके। वहां जाने के पूर्व वह ३५४२ गणित के नए सूत्र हल कर चुके थे।

अंत में प्रो. हार्डी ने इस महान दुर्लभ व्यक्तित्व को अपने प्रभाव एवं धन से केम्ब्रिज में बुला लिया।

श्री रामानुजन् शुद्ध शाकाहारी थे। वहाँ वह अपना भोजन स्वयं बनाते तथा नियमित सुबह स्नानादि कर पूजा अर्चना करते थे।

प्रो. हार्डी रामानुजन की प्रतिभा का लोहा मानते थे। उन्होंने रामानुजन को १०० के पैमाने पर १०० में १०० अंक दिए जबकि संसार के महान गणितज्ञों को १०० में ३५ अंक ही दे सके। रामानुजन् के एक शोध पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने बी.ए. की उपाधि प्रदान की। उनकी गणित के क्षेत्र में अद्वितीय महान उपलब्धियों के कारण रायल सोसाइटी का फेलो बनाया गया तथा ट्रिनीटी कॉलेज की छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई। उनको विश्व-यश मिला। इग्लैंड की जलवायु उनके अनुकूल न थी। उन्हें वहां क्षय रोग हो गया। स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण वह भारत लौट आए और मद्रास विश्वविद्यालय में वह गणित के प्रोफेसर के रूप में पढ़ाने लगे।

बीमारी पर भी वह प्रतिदिन पढ़ाते और अपने काम में कोई त्रुटि या कमी नहीं करते थे।

ट्रिनीटी कॉलेज पुस्तकालय लंदन में आज भी उनका वह रजिस्टर सुरक्षित है जिसमें वह गणित के सूत्र तथा प्रमेय लिखा करते थे। गणित के

अद्वितीय व्यक्तित्व के रूप में वह विश्व विख्यात हैं।

श्रीनिवास रामानुजन का असामयिक निधन २६ अप्रैल १९२० ई. को वर्तमान चेन्नई तमिलनाडू में हो गया। उनके दुखद निधन से विश्व में अंधेरा छा गया।

भारत सरकार ने उनकी जयंती को गणित दिवस के रूप में मानाने की घोषणा की है।

वह विश्व के अति सम्मानित व्यक्ति के रूप में मानव स्मृतियों में सदैव बने रहेंगें।

● लखनऊ (उ.प्र.)

(अटल जयंती : २५ दिसम्बर)

निशाने पर पेट

प्रसंगः शैवाल सत्यार्थी

१९५७ की बात है। अटल जी पहली बार बलरामपुर (उ.प्र.) से लोकसभा के चुनाव में खड़े हुए थे। इकहरे बदन के अटल जी पर मोटापा अपना रंग दिखाने लगा था। पेट बाहर झाँकने की कोशिश में था। हम कुछ मित्र, जो उनसे बेहद प्रेम करते थे, चिन्ता से घिर गए। मोटापे की यह हरकत, हमें कहाँ सहन हो सकती थी?

हमारे घर से लगी जो गली है, वह अटल जी के कमलसिंह के बाग स्थित, उनके घर तक जाती है। भारत टॉकीज वाली सड़क पर आने के लिए, यही गली शॉर्ट कट है तो हमारे घर के सामने से उनका निकलना होता... पद चिन्ह निशानी हैं कि चला होगा कोई... चाय के लिए हमने रोका, और वे रुके, तो समय ठहर सा गया।

एक भोर कुछ मित्र मेरे यहाँ इकट्ठे हुए, इनमें शामिल थे– जगदीश तोमर, मुनीन्द्र मिश्र और श्याम निगम, मझले भैया। विद्यास्वरूप जी तो सबसे आगे थे ही... टोली चली, निशाने पर तो पेट ही था। श्री सदाबिहारी जी, अटल जी के बड़े भैया बाहर ही मिल गए। बोले– ''अटल से मिलने आए हैं बुलाता हूँ।''

बुलाने की नौबत ही नहीं आ पाई... आवाज सुनकर ही वे बैठक में आ गए और हमारे साथ बैठ गए। बहुत देर तक बहुत सी बातें। होती रहीं। साहित्य की, राजनीति की। चाय भी हुई, और लगे हाथ आग्रह पूर्वक उनसे उनकी नई कविता भी सुन ली गई। समय पर्याप्त हो गया, और हम थे कि उठने का नाम नहीं ले रहे थे। बस, एक –दूसरे की ओर, असहाय से देखे जा रहे थे।

समस्या जटिल थी कि शेर के दाँत कौन गिने। वे तुरंत भाँप गए, मुसकरा कर बोले– ''क्या बात है? कोई गंभीर समस्या है क्या?'' कोई कुछ नहीं बोला, सबकी निगाहें सूत्रधार पर टिक गईं...

''क्या बात है शैवाल?'' अब उनकी मुसकान पूरी खिल गई थी।

''भैया, बात यह है... भैया...'' मेरी जुबान अटक गई थी, पर निशाने पर तो पेट ही था।

''ओह...ये। ऐसा होना नहीं चाहिए (यह अटल जी के भाषण का प्रत्येक जन–सभा का तकिया कलाम हुआ करता था।)– पर, हो रहा है...'' चिर परिचित ठहाका लगाया, और बोले– ''आप सब की सद्भावना तथा चिन्ता मैं समझ रहा हूँ। कोशिश तो मैं भी कर रहा हूँ, घटाने की– कुछ समय तो दीजिए।''

हम लोग तब भी खुलकर हँसे थे और यह संस्मरण लिखते समय भी अपनी हँसी रोक नहीं पा रहा हूँ। यह सोचकर कि हमारे निशाने पर जो चीज थी– उसका आकार घटने के स्थान पर, दिन–दिन बढ़ता ही गया– और विवश अटल जी, बस, समय ही माँगते रहे।

● ग्वालियर (म.प्र.)

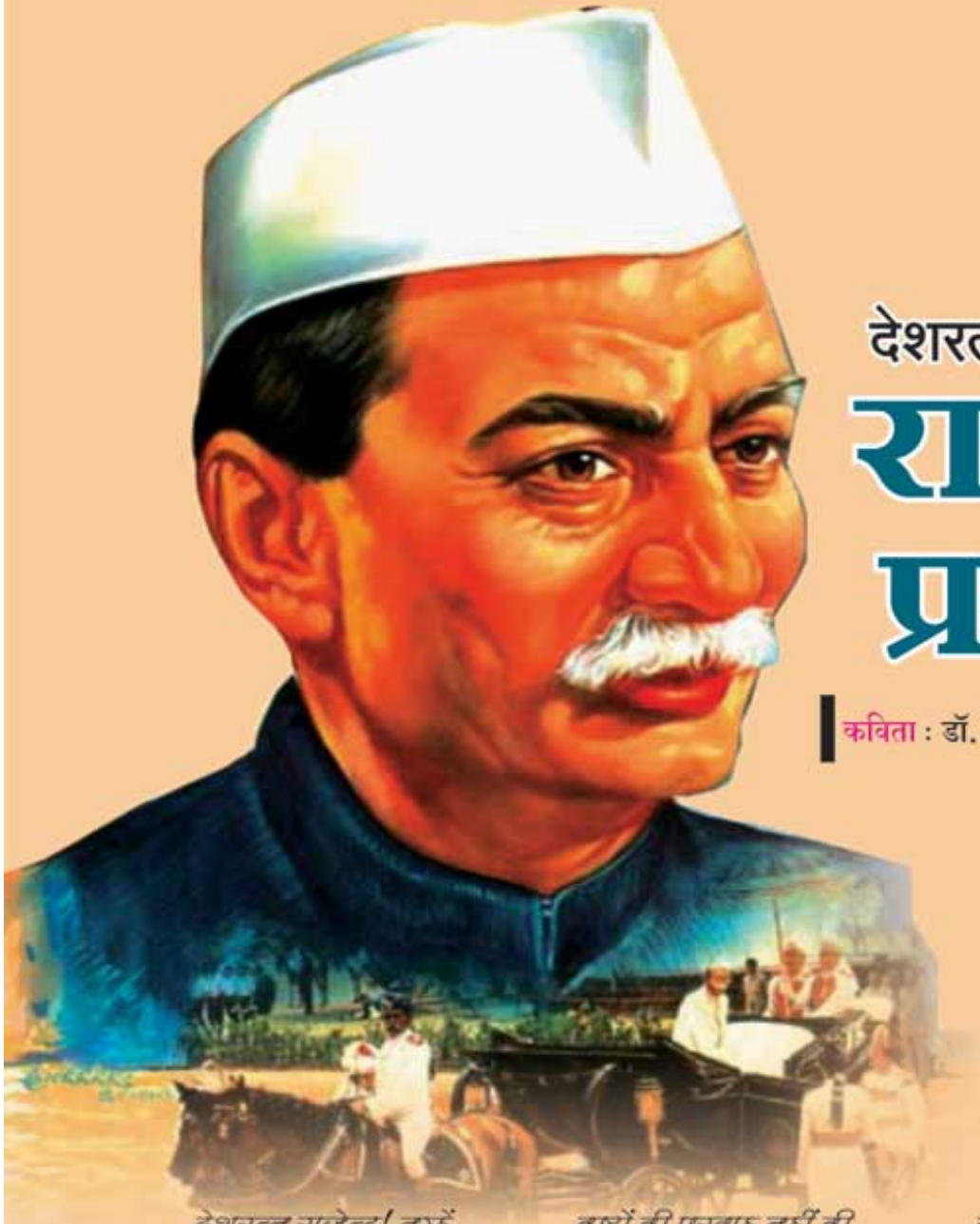

देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद

कविता : डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

देशरत्न राजेन्द्र! तुम्हें
है कोटि प्रणाम हमारा।
बने हमारी स्वतंत्रता के,
तुम महान सेनानी।
बड़े देश-सेवा के पथ पर,
त्यागी मस्त जवानी।।
किया समर्पित मातृभूमि पर
तन-मन-जीवन सारा।
देशरत्न राजेन्द्र! तुम्हें है
कोटि प्रणाम हमारा।।
संघर्षों को भी तो तुमने,
हंसकर ही अपनाया।
कष्टों की परवाह नहीं की,
धैर्य महा दिखलाया।।
लिया निरन्तर सत्याग्रह का
तुमने एक सहारा।
देशरत्न राजेन्द्र! तुम्हें है
कोटि प्रणाम हमारा।।
हुए सादगी, सौम्य सरलता,
के तुम परम पुजारी।
सत्य, अहिंसा-प्रेम एकता,
सेवा के व्रतधारी।।
बड़ी तुम्हारे हृदय-सिन्धु में
करूणा की ही धारा।
देशरत्न राजेन्द्र! तुम्हें है
कोटि प्रणाम हमारा।।
अधिकारों से बढ़कर तुमने,
कर्त्तव्यों को जाना।
मिला राष्ट्रपति का पद फिर भी,
बन्धु सभी को माना।।
इतिहासों में अमर रहेगा,
युग-युग नाम तुम्हारा।
देशरत्न राजेन्द्र! तुम्हें है
कोटि प्रणाम हमारा।

● लखनऊ (उ.प्र.)

कहानी कहावत की

(टेढ़ी खीर होना- जिस कार्य को करने में कठिनाई का सामना करना पड़े)

संवादः शंकरलाल माहेश्वरी

राहुल – दोस्त रामधन! कल मेरा जन्मदिन है और तुम्हे सायंकाल घर पर जन्म दिवस के उत्सव में शामिल होना है।

रामधन– राहुल! मुझे क्षमा करना मैं चाहकर भी नहीं आ पाऊंगा क्योंकि अंधा होने के कारण उत्सव का आनन्द नहीं ले पाऊंगा और मेरी सार संभाल में तुम लोगों को भी कठिनाई होगी।

राहुल– नहीं रामधन। तुम्हें आना ही पड़ेगा। तुम्ही तो मेरे बचपन के साथी रहे हो। मेरी हर परेशानी में तुम्हारा साथ रहा है। यदि तुम नहीं आओगे तो समारोह की रौनक ही नहीं रहेगी।

रामधन– अच्छा यह बताओ इस अवसर पर कौन कौन आयेंगे।

राहुल– अपने गुरुजी सत्यदेव जी, रमेश, दिनेश, अवधेश, हिमांशु, सौम्या आदि सभी ने आने की स्वीकृति दी है।

रामधन– ठीक है, मैं अवश्य आऊंगा। सभी से मिलना हो जाएगा। अरे हाँ कल तो दो अक्टूबर है बापू का भी जन्म दिवस है जिसे सारा देश मनाएगा। यह दिन देशवासियों के लिए गौरव का दिन है। इसलिए तुम तो धन्य हो गये।

राहुल – ठीक है। तुम हिमांशु के साथ आ जाना वह तुम्हें साथ ले आयेगा।

रामधन– राहुल। इतना जरूर ध्यान रखना जन्मदिन भारतीय परम्पराओं के अनुसार मनाना है। तुम्हारा ये सौलहवां जन्मदिवस होगा अतः सरस्वती देवी और माता पिता के चित्र के सम्मुख सौलह घी के दीपक जलाकर सरस्वती माँ की पूजा अर्चना करनी हैं और गुरुजी व मातापिता तथा बड़ों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करना होगा तभी जन्म दिन के आयोजन की सार्थकता रहेगी समझ गये न।

राहुल – रामधन भैया। तुमने तो मेरे मन की बात कह दी ऐसा ही होगा। पूर्ण रूप से गुरुजी के सान्निध्य में भारतीय पद्धति से यह जन्मदिन मनाया जाएगा।

(समय चार बजे है सभी आमंत्रित सदस्यों का आगमन हो गया है धूमधाम से पूजा अर्चना के साथ जन्मोत्सव का आयोजन गीत–संगीत सहित सम्पन्न हुआ तत्पश्चात सहभोग का आयोजन रखा गया।)

रामधन–राहुल जी जन्मदिन की मंगलकामनाएँ।

राहुल– बहुत बहुत धन्यवाद।

रामधन– यह बताओ आज के सहभोज में क्या क्या बनाया है?

राहुल – मेरा प्रिय भोजन है खीर

मालपुए यही बनाये हैं।

रामधन– वाह! क्या बात है।

राहुल– रामधन! तुम्हारे आ जाने से मेरा जन्मदिन सार्थक हो गया हैं मैं बहुत आभारी हूँ तुम्हारा।

रामधन– यह तो बताओ कि ये खीर दिखती कैसी है?

राहुल – जैसे दूध सफेद होता है ठीक उसी तरह सफेद रंग की दिखाई देती है।

रामधन– राहुल। मुझ तो दिखाई नहीं देता है सफेद और काली का मुझे बोध नहीं है यह सफेद कैसा होता है।

राहुल – मित्र। सफेद ठीक वैसा ही होता है जैसे बगुला।

रामधन– यह बगुला कैसा होता है।

(राहुल ने कई तरह से समझाने का प्रयास किया किन्तु समझा नहीं सका अंत में एक तरकीब से उसे समझाया उसने अपने हाथ की अंगुलियों को मोड़कर चोंच जैसा आकार बनाया और कलाई से हाथ को मोड़कर कहा।)

राहुल– रामधन! तुम मेरे हाथ को छूकर देखो, ऐसा दिखाता है बगुला।

(रामधन ने राहुल के मुड़े हुए हाथ को स्पर्श करते हुए अंगुलियों से मोड़कर बनाई चोंच और गर्दन को स्पर्श किया और मन ही मन उत्सुकता से बगुले के आकार को समझने की कोशिश करने लगा।)

रामधन– (हाथ को टटोलने के बाद) अरे! वह खीर तो बड़ी टेढ़ी खीर है दोस्त!

इस प्रकार टेढ़ी खीर होना मुहावरे का प्रचलन हुआ। इस तरह किसी भी प्रकार के जटिल कार्य के लिए टेढ़ी खीर होना मुहावरा प्रयुक्त होने लगा।

● आगूचा (राज.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *पंचवटी में सोने का हिरण बन कर आने वाला राक्षस कौन था?*
- *विराटराज की पुत्री उत्तरा का विवाह किसके साथ हुआ?*
- *पूर्वी यूरोप के देश लिथुआनिया के लोग अपने को किन का वंशज मानते हैं?*
- *अपने देश के किस क्षेत्र को महाभारत काल में प्रागज्योतिषपुर कहा जाता था?*
- *देवताओं के सेनापति कौन थे?*
- *क्रूर बख्तियार खिलजी को परास्त करने वाले असम के राजा कौन थे?*
- *आचार्य धुण्डिनाथ का लिखा ग्रंथ 'व्योमयानार्क प्रकाश' किस विषय से सम्बन्धित है?*
- *वनवासियों में भगवान माने जाने वाले वे क्रांतिकारी कौन थे जिन्होंने अंग्रेजों से जम कर संघर्ष किया?*
- *मेवाड़ के ३२ दुर्ग अकेले बनवाने वाले यशस्वी महाराणा कौन थे?*
- *पुत्र का विवाह बीच में ही छोड़ युद्ध भूमि में जाने वाले पंजाब के वीर सेनापति कौन थे?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

जीवनभर विद्यार्थी

कविता: डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी

जीवन के आखिरी दिनों में बापू की थी इच्छा,
यदि वे सीखें बंगला भाषा, होता कितना अच्छा।
उन्यासी की उम्र हुई थी, किन्तु न थी वह बाधा,
बंगला भाषा उन्हें सिखातीं बीस साल की आभा।
शुरु-शुरु में पौत्रवधु आभा को था संकोच,
मगर दूर हो गया था तुरत सुन बापू की सोच।
तेरे पास ज्ञान है जो, उसकी है मुझे जरुरत,
बिना झिझक सिखलाओ मुझको, यह है सही मुहूरत।
तीस जनवरी अड़तालिस, बलिदान दिवस की घटना,
बापू ने जो नियम बनाये, कभी न पीछे हटना।
पिछले कई दिनों से बापू ने उपवास किया था,
उस दिन मिलने वालों को भी काफी समय दिया था।
आज आप तो थके हुए हैं बहुत कड़ी मेहनत कर,
बंगला पाठ न करें आज, आराम करें अब चलकर।
आभा की बातें सुनकर आँखें उनकी मुसकातीं,
बंगला पाठ खुराक ज्ञान की, मुझे दया न भाती।
उस दिन बंगला पाठ पढ़ा, फिर लिखा उन्होंने जमकर
देख रही थीं आभा गांधी अचरज से ही भरकर।
जब तक बच्चा पले गर्भ में तब से मरते दम तक,
वह रहता है विद्यार्थी, कहते थे बापू अक्सर।
अपनी बातें बापू ने सचमुच ही कर दिखलाईं,
अंतिम दिन भी की थी बंगला की सम्पूर्ण पढ़ाई।

● पटना (बिहार)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१७)

कथासत्र-१६

देवदामोदर गुरु

(आविर्भाव १४८८ ई. तिरोभाव १५९८ ई.)

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर रविवार को सब एकत्र हो गए। दादाजी उस दिन अधिक गंभीर मुद्रा में थे। उनकी तरफ देखकर मनोरमा ने कहा– ''दादाजी! आपको क्या हुआ, आप आज बहुत गंभीर होकर बैठे हैं?''

दादाजी– तुम ठीक ही कह रही हो मनोरमा। हमारे देश की स्थिति बहुत बिगड़ गई है, उसे देखकर कभी–कभी चिन्तित हो जाता हूं। ठीक है, आज कामरूप के अन्य एक संत के बारे मे सुनाऊंगा, तुम लोग ध्यान से सुनो। परन्तु आप संत अधिक थे साहित्यकार कम थे, किन्तु उन्होंने अनेक साहित्यकारों का सृजन किया था।

शंकर – उन संत ने स्वयं कुछ नहीं लिखा था, परन्तु दूसरों के द्वारा लिखवाते थे, यह कैसी बात है दादाजी?

दादाजी – हाँ, यह सबसे बड़ी बात है शंकर द्वारा अनेकों से सृजन कराना कितना महत्वपूर्ण काम है, गंभीरता के साथ विचार करो तो।

मनोरमा– दूसरों को आगे बढ़ाने का प्रयास सबसे महत्वपूर्ण है दादाजी। आप सुनाइए तो उनके बारे में।

दादाजी – आप गौतम गोत्र के ब्राह्मण थे। उनके पूर्वज भी कन्नौज से कामरूप गए थे। उनके पूर्व भी श्रीमंत शंकरदेव के पूर्वजों के साथ कामरूप पहुंचे थे। उनके पिता का नाम सदानंद और माता का नाम सुशीला था। पहले वे लोग निचले कामरूप में रहते थे और बाद में श्रीमंत शंकरदेव के जन्मस्थान आलिपुखुरी–बरदोवा के पास नलचा नामक गाँव में रहने लगे थे। श्रीमंत शंकरदेव के साथ सदानंद की मित्रता थी। अपने–अपने घरों में आना जाना चलता था। एक दिन श्रीमंत शंकरदेव सदानंद के घर आए थे। उस दिन सदानंद के घर में थोड़ा उत्साह का माहौल देखकर श्रीमंत शंकरदेव ने सदानंद ब्राह्मण से जब इसका कारण पूछा तो सदानंद ने कहा कि घर में पुत्र रत्न का जन्म हुआ है, तब श्रीमंत शंकरदेव के मुँह से अपने आप ''दामोदर दामोदर'' शब्द निकल गए और मित्र से कहा– बहुत अच्छी बात है। आप बालक का नाम दामोदर रखिए और यह बालक समय पर महान पुरुष बन जाएगा। जिसके कारण बालक का नाम दामोदर हुआ।

बालक दामोदर देखने में बहुत सुन्दर थे। पिता सदानंद एक नैष्ठिक ब्राह्मण ही नहीं थे अपितु बहुत बड़े विद्वान भी थे। दामोदर के दो बड़े भाई थे। उस समय कामरूप में शिक्षा का विस्तार बहुत कम था और व्यवस्था भी नगण्य थी। सदानंद ने एक गुरुकुल भी चलाया था। संयोगवश गौड़ राज्य के नवद्वीप से **कलाप वल्लभ भट्टाचार्य** नामक एक बहुत बड़े विद्वान ब्राह्मण वहाँ उपस्थित हुए। सदानंद ने ब्राह्मण को आदर और सम्मान सहित अपने गुरुकुल में रखा और अपने तीनों पुत्रों को शिक्षा देने की व्यवस्था की। तीनों में दामोदर अधिक मेधावी थे। कुछ दिनों में विभिन्न विषयों का ज्ञान हासिल कर लिया। उसके पश्चात विवाह कर सांसारिक धर्म पालन करने लगे। उनकी पत्नी का नाम था सीतादेवी। सुख शांति से संसार चलने लगा, परन्तु धीरे–धीरे उनके संसार में काले बादल छाने लगे। एक–एक करके घर के कई लोगों का देहान्त होने लगा। कुछ दिन पश्चात् सदानंद का भी स्वर्गवास हो गया। बड़े भाइयों की भी मृत्यु हो गई। विधवा बहुओं के साथ माता सुशीला और दामोदर की दुर्गति की सीमा न रही। इतने में माता का भी निधन हो गया। उधर राजनैतिक उठा–पटक के कारण वहाँ रहना असंभव हुआ। निरुपाय होकर दामोदर ने अपनी पत्नी सहित तीन विधवा भाभियों को लेकर निचले कामरूप के हाजो नामक स्थान पर उपस्थित हुए। बाल्यावस्था से

दामोदर श्रीमंत शंकरदेव के संपर्क में रहा था। श्रीमंत शंकरदेव दामोदर को बहुत चाहते थे। दामोदर भी शंकरदेव को अत्यंत श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। इस प्रकार दामोदर भी गीता और भागवत के मतों के अनुसार कर्मकाण्ड वर्जित एकेश्वरवादी नामधर्म के कट्टर अनुयायी बने और नामधर्म के अनुसार लोगों को शरण देने लगे थे। लोगों को शरण देने का आदेश श्रीमंत शंकरदेव ने ही इन्हें दिया था। गुरुचरित्र के अनुसार हाजो में रहते समय किसी संन्यासी से आपको दीक्षा भी मिली थी। हाजो में उन्होंने अनेक लोगों को शरण प्रदान की। हाजो में रहते समय दामोदरदेव का संभाषण महाप्रभु चैतन्यदेव से होने का उल्लेख गुरुचरितों में है।

माधव– नानाजी! महाप्रभु चैतन्यदेव कौन थे?

दादाजी– महाप्रभु चैतन्यदेव बंगाल के एक महान संत थे। उन्होंने भी समाज में कृष्ण भक्ति का प्रचार किया था।

शंकर – उसके पश्चात दामोदरदेव ने क्या किया?

दादाजी– दामोदर देव हाजो में भी स्थायी रूप से नहीं रह सके। अपने भतीजे मुकुन्ददेव को साथ लेकर परिवार सहित नाव से वियासपुर नामक गाँव पहुँचे, वहाँ रामराय नामक एक भक्त से साक्षात हुआ। रामराय के अनुरोध पर वहाँ रहने लगे। उस समय श्रीमंत शंकरदेव भी धनुखंदा नामक एक जलाशय के उस पार रहते थे। वहाँ फिर शंकरदेव–माधवदेव के साथ दामोदरदेव का मिलन हुआ। वहाँ त्रिमूर्तियों के संगम से हरिनाम की ध्वनि चारों तरफ मुखरित होने लगी। वहाँ एक टुकड़ा जमीन लेकर सत्र नामघर स्थापना की। बाद में इस स्थान का नाम हुआ पाटबाउसी। महापुरुषों के मिलन से यह स्थान एक धर्मशिक्षा का केन्द्र बन चुका था उस समय।

मनोरमा– अच्छा दादाजी! आपने पहले जिन महान संतों के बारे में सुनाया था ये भी दामोदरदेव के साथ मिलजुल कर काम करते थे क्या?

दादाजी – हाँ, हाँ! उसके पहले संतगुरु हरिदेव भी ऊपरी कामरूप के नारायणपुर से आकर बहति नामक गाँव में सत्र नामघर स्थापना कर हरिनाम धर्म का प्रचार करते रहते थे। उस समय के चारों महान संत गुरु एक साथ मिलकर गीता–भागवत की चर्चा करते थे। उल्लेखनीय बात यह है कि चारों के मतों में कुछ भी भिन्नता नहीं थी। दल के दल लोग आकर उनसे शरण ग्रहण करने लगे थे। श्रीमंत शंकरदेव की तरह दामोदर देव ने भी ऊँच–नीच सभी जाति के लोगों को शरण प्रदान करते थे। इस प्रकार सभी देवी–देवताओं को नकारकर और बलि आदि हिंसा धर्म को बहिष्कार करते हुए परम निर्मल एकेश्वरवादी नाम धर्म प्रचार करने लगे। उनके पास लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। उनका प्रभाव भी बढ़ने लगा। इस प्रकार के बढ़ते प्रभाव को देखकर कर्मकाण्डी ब्रह्मणगण जलने लगे और कोच वंश के राजा परीक्षितनारायण के पास जाकर कहा– ''महाराज! आपके राज्य में दामोदर नामक एक ब्राह्मण सभी देवी–देवताओं को नकारकर, बलि आदि को बहिष्कार कर एकेश्वरवादी नाम धर्म से लोगों को प्रभावित कर रहा है। इससे राज्य में अमंगल होगा। आप तुरंत ध्यान दें अन्यथा आपका राज्य नष्ट हो जाएगा।'' राज्य नष्ट होने की आशंका की बात सुनकर महाराज परीक्षितनारायण आग बबूला होकर दामोदर को या तो बलि प्रदान कर दुर्गापूजा करें अन्यथा उनको पकड़कर लाने का कठोर आदेश दिया। दूत ने तुरंत उनके पास जाकर आदेश सुनाया। तब दामोदरदेव ने जोर से कहा– ''**एक लक्ष्मीनारायण के बिना मैं किसी देवी–देवताओं की पूजा नहीं करूँगा, बलि की नाम ही नहीं लूंगा। इसके लिए मैं बलि पशु की गरदन की जगह मेरी गरदन रखने के लिए भी तैयार हूं। राजा के पास जाने के लिए मैं प्रस्तुत हूँ।**'' आपने अपने प्रपन्न शिष्य भट्टदेव को बुलाकर सत्र का दायित्व प्रदान किया और सभी सेवक भक्तों को निष्ठा के साथ सत्र को संचालित करने का आदेश देकर कई भक्तों के साथ चले गए। भक्तों के साथ दामोदर देव जब जा रहे थे तब उनका सौन्दर्य देखकर लोग मानों भगवान का रूप दर्शन करने लगे थे। रास्ते में एक ढोंगी संन्यासी से उनका

साक्षात् हुआ। उसका नाम कामेश्वरगिरी था। वह भी ब्राह्मण था। उसने दामोदरदेव को अत्यंत श्रद्धा दिखाकर घर ले गया और उनको बहुत तंग किया। अपनी आध्यत्मिक शक्ति से गुरु उस दुष्ट के चंगुल से निकले और वेदुवा नामक एक चैतन्य पंथी भक्तों के साथ परिचय हुआ। वेदुवा विप्र परमभक्त थे। दामोदर गुरु को देखते ही परम श्रद्धा और आदर के साथ अपने घर ले गए और रहने की व्यवस्था कर दी। वहाँ परम शांति से गुरुदेव रहे और कई लोग आकर उनसे शरण ग्रहण करने लगे।

उधर राजा ने देश के और विदेशों से आए विद्वान ब्राह्मणों के साथ अपने मत को सही प्रमाणित करने हेतु शास्त्रार्थ करने के लिए दरबार में आमंत्रित किया। गुरु दामोदर मानो उसके लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। राजा परीक्षितनारायण के सामने बहस हुई। विद्वान ब्राह्मणों ने देवी देवता और बलि आदि का प्रमाण शास्त्र के आधार पर स्थापित करने का प्रयास तो किया, परंतु गुरु दामोदर ने गीता भागवत के माध्यम से सब मंडन कर भागवत के ''तरुमुल श्लोकों'' का उल्लेख और कलियुग में एक हरिनाम धर्म ही श्रेष्ठ है इसका भी उल्लेख किया। उसके बाद राजा ने विद्वान ब्राह्मणों से पूछा– दामोदर देव ने जो कुछ कहा ये इस कलियुग के लिए प्रशस्त है या नहीं? तब यदुमणि चक्रवर्ती नामक एक ब्राह्मण ने कहा– ''महाराज! दामोदर देव ने जो कुछ कहा ये सब सत्य और शास्त्रों पर आधारित है।'' सभी कर्मकाण्डी ब्राह्मणों ने शिर नत कर लिया। राजा ने प्रसन्न होकर दामोदर देव की सराहना कर सभा का समापन किया।

मनोरमा – तरुमूल श्लोक क्या है दादाजी?

दादाजी – बताता हूँ श्रीमद्भागवत के चतुर्थ स्कंध के एकतीस अध्याय के चौदहवें श्लोक को तरुमूल श्लोक कहा जाता है। इसका अर्थ इस प्रकार है– जिस प्रकार वृक्ष के मूल या जड़ में पानी डालने से उसके तने से लेकर डालियाँ टहनियां तक तृप्त हो जाती हैं, और जिस तरह प्राण को आहार देने पर सारी इन्द्रियाँ तृप्त हो जाती है, उसी तरह एक मात्र श्रीकृष्ण की आराधना से अन्य समस्त देवी–देवता संतुष्ट हो जाते हैं, क्योंकि परात्पर ब्रह्मरूपी श्रीकृष्ण ही मूल है।''

माधव– दामोदरदेव भी बहुत बड़े विद्वान थे, है न नानाजी?

दादाजी – तुम ठीक कहते हो माधव! ठीक है आज समय हो गया अगले रविवार को फिर सुनाएंगे। राम...राम...

तीनों– राम...राम.....।

● ब्रह्मसत्र तैतलिया, गुवाहाटी (असम)

मनोरंजक चित्र पहेलियां

● चांद मो. घोसी

(उत्तर इसी अंक में।)

मोहित की शरारत

चित्रकथा
देवांशु वत्स

(जयंती : ३ दिसम्बर)

सादगी की मूर्ति

प्रसंग : कैलाश जैन

सन् १९०६ में राजेन्द्र बाबू ने कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में एम.ए. में दाखिला लिया। एम. ए. की परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए उन दिनों पूर्व परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य था। अंग्रेज प्राचार्य कक्षा में पूर्व परीक्षा के परिणाम घोषित कर रहे थे। उनके द्वारा सुनाई गई उत्तीर्ण छात्रों की सूची में राजेन्द्र बाबू का नाम नहीं था। इस पर राजेन्द्र बाबू ने प्राचार्य से कहा– ''श्रीमान् आपने मेरा नाम उत्तीर्ण छात्रों में नहीं सुनाया है।''

प्राचार्य ने कुछ नाराज होते हुए कहा– ''तुम्हारा नाम नहीं सुनाया गया, इसका सीधा सा अर्थ है कि तुम उत्तीर्ण नहीं हुए हो।''

राजेन्द्र बाबू ने दृढ़ स्वर में कहा– ''ऐसा कभी नहीं हो सकता।''

प्राचार्य तैश में आकर बोले– ''तुम मेरा और कॉलेज का अपमान कर रहे हो, तुम पर पांच रूपया जुर्माना किया जाता है।'' लेकिन राजेन्द्र बाबू जिद पर अड़े रहे। प्राचार्य उन पर जुर्माने की राशि बढ़ाते गए। प्राचार्य और राजेन्द्र बाबू के बीच स्वाभिमान की यह रस्सा कशी अभी जारी थी कि कॉलेज का वरिष्ठ लिपिक घबराया हुआ सा कक्षा में आया और उसने प्राचार्य को बताया कि यह विद्यार्थी तो सर्वप्रथम आया है, भूलवश उसका नाम उत्तीर्ण छात्रों की सूची में लिखने से रह गया था।

प्राचार्य पर घड़ों पानी पड़ गया और राजेन्द्र बाबू के होठों पर आत्मविश्वास भरी एक मुस्कराहट खिल गई। यह उदाहरण उनके दृढ़ आत्म विश्वास को तो रेखांकित करता ही है, साथ ही उनके स्वाभिमानी व्यक्तित्व को भी उजागर करता है।

*****

आजादी से पूर्व की घटना है, जब राजेन्द्र बाबू राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। पार्टी के किसी कार्य से वह जवाहर लाल नेहरू से मिलने आनन्द भवन गए। रात काफी हो चुकी थी तथा नेहरू परिवार के सभी सदस्य सो चुके थे। राजेन्द्र बाबू ने ऐसी स्थिति में किसी को जगाना उचित नहीं समझा और आनन्द भवन के बरामदे में ही अपना कम्बल ओढकर लेट गए। सर्दी के मौसम में दमें के रोगी राजेन्द्र बाबू बहुत प्रयत्न करने पर भी अपनी खांसी को नहीं रोक पाए। रात को सन्नाटे में गूंजती खांसी की आवाज से नेहरू जी की नींद खुल गई, वह उठकर बाहर आए। जब उन्होंने बाहर राजेन्द्र बाबू को बेतरह खांसते पाया तो उन्हें घोर आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा– ''आप कब आये?''

''मैं रात को दस बजे आ गया था। आप सो गए थे मैंने आपको जगाकर कष्ट देना उचित नहीं समझा।'' राजेन्द्र प्रसाद ने सहजता से कहा। फिर नेहरू जी बहुत अफसोस जाहिर करते हुए उन्हें अन्दर लिवा ले गए। दूसरों की सुविधा के लिए खुद कष्ट उठा लेना उनका स्वभाव था। ● **भवानी मंडी (राज.)**

गाथा वीर शिवाजी की-२३
(उत्तरार्द्ध)

भूतों ने किला जीता

'हाँ केवल ६० लोगों के साथ। झाड़-झंखाड़ों को लांघते रात में हम गढ़ के नीचे दीवार जैसे सीधे पहाड़ी कटाव के पास पहुंचे। किस जगह से चढ़ना था और किस तरह ऊपर पहुंचना होगा यह सब हमने देखभाल करके पहले ही से निश्चय कर रखा था। कोंडाजी ने अपने कुछ जासूस किले में भेजकर बहुत से भेद जान लिये थे। भीतर के कुछ लोगों को भी अपना हमदर्द बना लिया था। हम लोगों के पास मेखें, रस्सी, कीले, सीढ़ियाँ, वाघनख, सिंगियां तुरही और हल्के शस्त्रास्त्र थे। सबसे आगे कोंडाजी थे। हम में से हर एक इस का का अच्छा जानकार था। कीलों और मेंखों को ठोकते, एक दूसरे को हाथ का सहारा देते और रस्सी को जगह-जगह सहारे के लिए बांधते हम धीरे-धीरे ऊपर चढते गये। कई घण्टों के परिश्रम के बाद हम सब ऊपर चढ़ने में सफल हो गये। भीतर के लोग दुर्ग के पिछले भाग से इतने अधिक आश्वस्त थे कि उस ओर अधिक चौकसी भी नहीं थी। हम साठ व्यक्ति एक जगह जमा हो गये। भीतर पहुंचने के लिए हमें एक दीवार को फांदना पड़ा। हमारे लिए यह कार्य अधिक कठिन नहीं था। दीवार के नीचे फांदते ही हमने एक मशालधारी पहरेदार को अपनी तरफ आते हुए देखा। शायद हमारे दीवार फांदने की आवाज उसने सुनी थी या सामान्य चौकसी के लिए वह उधर आ रहा था। किन्तु किसी प्रकार शोर मचाने के पूर्व ही हमने उसको दबोच लिया। कुछ लोग सिंगी और तुरही लेकर बिखर गये और इधर-उधर दौड़कर सिंगी और तुरही बजाने लगे। सिंगी और तुरही की आवाज सुनकर दुर्ग के भीतर के लोग भोंचक्के से हो गये। स्वप्न में भी वे नहीं समझ सकते थे कि किले में हजारों लोग घुस आये हैं। मशाल ले-लेकर दौड़ने लगे। मराठा सिपाहियों ने अंधेरे का लाभ उठाकर बीजापुरी सिपाहियों को या तो समाप्त करना शुरु किया या दबोच लिया। बीजापुरी सिपाही इस कल्पना से आतंकित थे कि शत्रु हजारों की संख्या में घुस आये हैं।

लड़ने के बजाय उन्हें अपने बचाव की चिंता हो रही थी। मराठों ने एक और चाल चली। वे अंधेरे में जगह-जगह पहुँचकर जय घोषों से वातावरण को अधिक आतंकित करने लगे। अन्दर वालों को विश्वास हो गया था कि उनके सैकड़ों साथी बागी हो गये हैं। अन्दर के मुसलमान सिपाही अपने ही हिन्दू सिपाहियों के शत्रु बन गए और उनकी आपस में ही मारकाट आरम्भ हो गई।'

कुछ रुक कर माणको जी ने पुनः अपने कथन को जारी रखा, 'कोंडाजी ने मुझे प्रवेश द्वार पर आक्रमण करके उसे खोलने का कार्य सौंपा था। हमारे साथ एक ऐसा व्यक्ति भी था जो जासूसी के लिए पहले दुर्ग में हो आया था। हम १०-१५ आदमी छुपते-छुपते प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ने लगे। हमारे साथी प्रवेश द्वार की विपरीत दिशा में काफी दूर सक्रिय थे। अतः भीतर वालों को ध्यान उसी ओर केन्द्रित हो रहा था। किले के भीतर हमारे सहायकों ने भी हमारे लिए निरापद व्यवस्था थी। हमने हूल देकर पहरेदारों को बिखेर दिया। सबसे पहले मशालची को अपना निशाना बनाया। उसके गिरते ही वहां के लोगों में घबराहट पैदा हो गई। वहां भी अंधकार फैल गया। बीजापुरी नारों को लगाते हुए हममें से कुछ दुर्ग के सिपाहियों में घुलमिल गये। अंधेरे में एक दूसरे को पहचानना कठिन हो गया था। किसी ने मशाल जलाने का यत्न किया तो एक सनसनाते हुए तीर ने उसका काम तमाम कर दिया। शत्रु का मनोबल गिर गया। हमारे सिपाही जो उनमें घुल-मिल गये थे, जान बचाकर भागने के लिए उन्हें प्रेरित करने लगे। मराठों के आक्रमण से उन्हें आतंकित करने लगे। इसी बीच हम दरवाजा खोलने में सफल हो गये और अनाजी पंत 'हर हर महादेव, शिवाजी महाराज की जय' के नारों के साथ भीतर घुस आये।'

नरसिंगा से रहा नहीं गया। अपनी जगह से वह उछल पड़ा और 'जय शिवाजी, जय भवानी' का नारा लगाने लगा।

हीरोजी ने उसे पकड़ कर बिठाते हुए कहा, 'चुप भी रहो मित्र। हां, उसके बाद क्या हुआ?'

'जिस समय अनाजी प्रवेश द्वार से दुर्ग में प्रवेश कर रहे थे ठीक उसी समय किले के भीतर भयानक युद्ध शुरु हुआ। दोस्त दुश्मन की पहचान मुश्किल हो गयी। किलेदार गहरी नींद से जागकर सीधे प्रवेश द्वार की ओर दौड़ता आ रहा था। ओट में छुपे हुए कोंडाजी चीते की चपलता के साथ किलेदार पर टूट पड़े। तलवार के दो-चार हाथ चले ही थे कि किलेदार धराशायी हो गया। एक ओर किलेदार को गिरता हुआ देखकर और दूसरी ओर मराठा सेना के जय निनाद को सुनकर दुर्ग का नायक गगोजी पंडित और उसके साथी जान बचाकर भाग खड़े हुए। दुर्ग में चारों तरफ मराठा सौनिक फैल गये और मुख्य स्थानों पर अधिकार जमा लिया।'

'माणको जी, क्या तुमने यह पूर्व विवरण महाराज को सुनाया?'

'महाराजने सुनकर क्या कहा?'

'महाराज बीच-बीच में बहुत प्रसन्न होते रहे। कभी-कभी वाह कोंडाजी कहते और कभी श्री राजाराम से कहते, 'सुने बाल राजे।'

हीरोजी ने बेचैनी से पूछा लिया, 'माणोजी दादा, यह भूतों वाला क्या मामला है?'

'यह सब रामजी की शैतानी है।' माणकोजी ने हंसते हुए कहा।

'भूतों की बात?' सुनो, मैं सुनाता हूं।' माणको जी को रोकते हुए रामजी कहने लगा।' जब इन्होंने अपनी पूरी बात सुनाई, तो महाराज अपने आसन से उठे और माणकोजी के पास जाकर उसके कन्धे पर हाथ रखा और अत्यंत हर्षोल्लास में भरकर कहने लगे, 'माणकोजी, जिस दुर्ग को हम स्वयं नहीं ले सके थे उसी को कोंडाजी के ६०भूतों ने ले लिया। शाबाश कोंडाजी।'

बहाने का असर

चित्रकथा
देवांशु वत्स

लीना का गणित

कहानी: चेतना उपाध्याय

''लीना जीजी आपका पर्चा कैसा हुआ? देखो ना मुझे तो यह प्रश्न आया ही नहीं पूरा छोड़ना पड़ा।'' लाली रुआंसी हो बोली, ''मेरा भी ठीक ठाक हुआ। हमारा प्रश्नपत्र तो बहुत कठिन था। पूरी कक्षा को ही बड़ी कठिनाई हुई'' कहते हुए लीना ने लाली से के हाथ पर्चा ले देखने का प्रयत्न किया।

''हे भगवान! जैसे का तैसा हमारा भी पर्चा यही है। इतना कठिन कैसे किया होगा तुमने? मुझे तो बड़ा दुःख हो रहा हैं तुम तो रात दिन मेहनत करती थी, हे भगवान! मेरी लाली को तो कम से कम दे ही देना।'' लीना अपनी गणवेश की सलवटें समेटते हुए बोली, ''अरे जीजी इतना मत डरो, इस प्रश्न को छोड़कर बाकी सभी प्रश्न हल किये हैं मैंनें। मुझ ८० प्रतिशत के आसपास अंक आ जाएगें।'' लाली पूरे आत्मविश्वास के साथा बोली। ''अच्छा तू! तो बड़ी महान निकली। मुझे भी बता कैसे किए?'' लीना ने वहीं कुर्सी सरका ली व बैठते हुए बोली।

लाली ने झट से अपनी स्कर्ट उठाई फूंक मार कर जमीन की धूल हटाई और वहीं बैठ गई। फटाफट पर्चा हाथ में लेते ही पहले प्रश्न से ही उत्तर बताने शुरु कर दिए। ''इस प्रश्न में यह सूत्र लगेगा तीसरे और ग्यारहवें प्रश्न में यह सूत्र लगेगा, देखो मेरा यह उत्तर आया है। इस विधि से इसे जाँच भी लिया उत्तर सही निकला'', लाली ने खुश होते हुए कहा। उसका आत्मविश्वास चेहरे व शब्दों से प्रकट हो रहा था। लीना की पुरानी गणवेश पहने हुए भी लाली बहुत प्यारी लग रही थी। नई शानदार गणवेश पहने लीना के चेहरे पर भी वह चमक नहीं थी। जो लाली के चेहरे से टपक रही थी। उसने फटाफट पूरा प्रश्न पत्र हल करके दिखा दिया बस एक प्रश्न में उसकी गाड़ी अटकी जिससे वह परेशान थी।

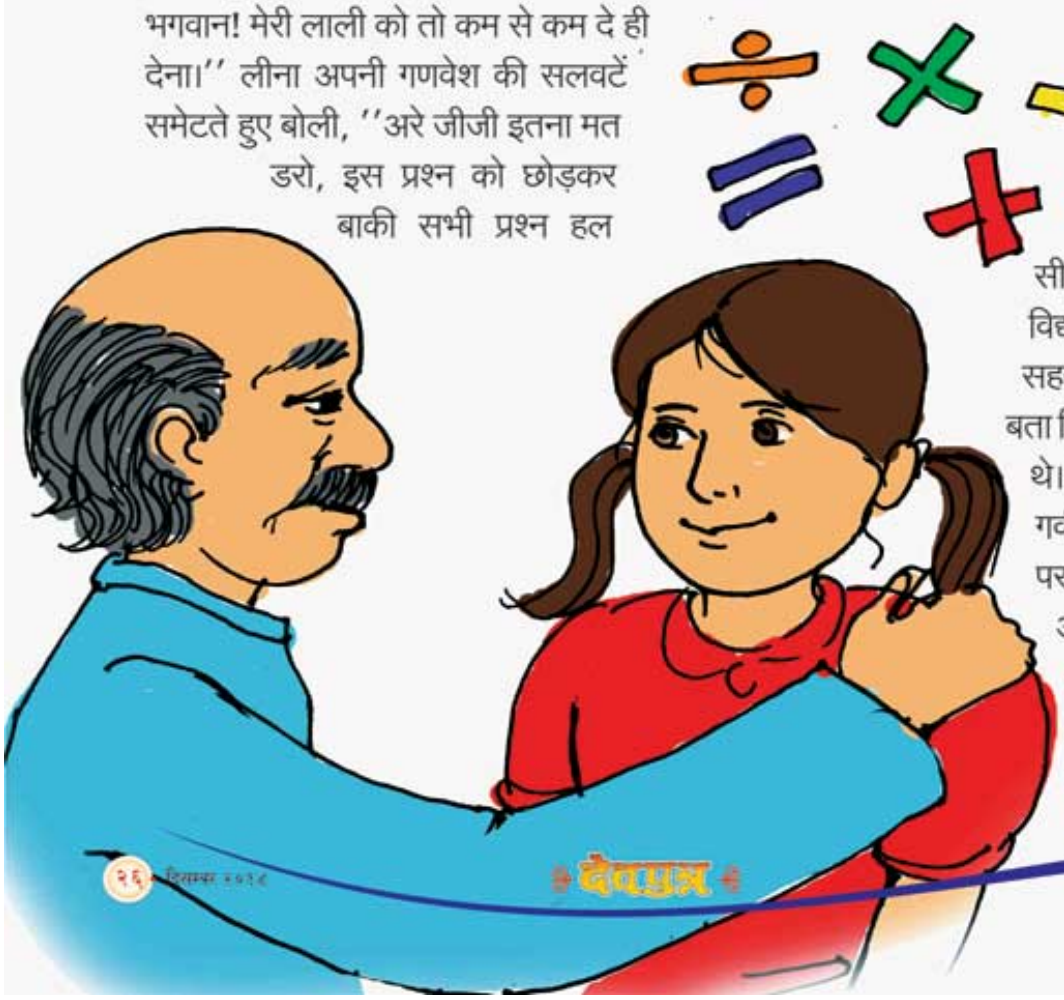

लीना तो आश्चर्यचकित सी देखती रह गई इस सरकारी विद्यालय की बच्ची को। कितनी सहजता से उसने सब प्रश्नोत्तर बता दिये जो कि उसे तो आते ही नहीं थे। ''वाह लाली! वाह मुझे तुझ पर गर्व है तुझ पर और अपनी दोस्ती पर। अच्छा दिखा तो...वो हिन्दी और विज्ञान का पर्चा'' अभी लाई जीजी कह कर लाली ने अपने घर नौकरों के आवास की तरफ दौड़ लगा दी।

लीना ने भी इतने में अपनी गणवेश बदल ली। उसने भी हिन्दी व विज्ञान के अपने पर्चे भी निकाल लिए। लाली के आते ही वो उसे अपने कमरे में ले गई वहाँ दोनों सखियाँ सहजता से पैर फैलाकर पलंग पर बैठ गई। बकायदा एक एक प्रश्न का मिलान हुआ। इसका मतलब हमारे सभी प्रश्न पत्र समान है? सिर्फ भाषा के माध्यम का अन्तर है। हमें अंग्रेजी में उत्तर लिखने होते हैं और तुम्हें हिन्दी में पर ऐसा कैसे? हमारी शाला तो शानदार भवन शानदार बनावट और छात्र संख्या भी लगभग २५०० इनके विद्यालय का भवन भी छोटा सा ना कोई पुस्तकालय, खेल मैदान, छात्र संख्या भी हमारे आगे कहीं नहीं टिकती मात्र दो सौ। कहाँ हम ढाई हजार छात्र हमारे शिक्षक भी सभ्य सुन्दर और इनके यों ही सामान्य से।

''नहीं बेटा अपनी गलती सुधारो। तुम्हारा विद्यालय भव्य व्यापरिक क्षेत्र और इनका शिक्षाआलय–शिक्षालय। वो भी सरकारी ढर्रे का।'' दादाजी अपनी रौबदार आवाज में बोले वो भी लीना की परेशानी भरी आवाज सुनकर इसके कमरे में ही आ गए थे। ''बेटा संवैधानिक गरिमा की बात है। सभी चौदह वर्ष तक के बालकों को निःशुल्क शिक्षा, समान शिक्षा का अधिकार है। इसके अन्तर्गत ही आजकल राज्य सरकारें भी अपनी अपनी समान शिक्षा प्रणाली अपने स्तर पर निर्मित कर लेती है।

तुम लोगों को आठवीं कक्षा को प्रश्नपत्र जो समान प्राप्त हुए हैं वो प्रारम्भिक शिक्षा पूर्णता प्रमाण पत्र मूल्यांकन प्रक्रिया के तहत प्राप्त हुए है। इसके लिए राज्य सरकार का विशेष प्रावधान अनिवार्य किया गया है। अतः निजी शिक्षण संस्थानों को भी इनका पालन अनिवार्य कर दिया गया है। यहाँ इस परीक्षा को मात्र दिव्यांगों हेतु वैकल्पिक रखा गया है। शेष सभी को अनिवार्य है।''

''पर दादाजी हमारी शाला का शैक्षिक स्तर तो बेहद शानदार है। पूरे शहर में इसका नाम है। अनेक शहरों में इसकी शाखाएं है। हमारे सारे छात्र सभ्रांत परिवारों से है।''

''तो क्या हुआ बेटी! समान शिक्षा का अधिकार तो समस्त बालकों को समान रूप से प्राप्त है। सभी बालकों को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं के अनुकूल निखरने के अधिकार हमारे भारतीय संविधान द्वारा प्राप्त है। इसलिए समस्त बालकों को समान मानते, स्वीकारते हुए, शिक्षा व्यवस्था का यह प्रावधान रखा गया है। तुम्हारी शाला निजी या गैर सरकारी है। इसे धनिक वर्ग द्वारा प्रारम्भ किया गया है। उसमें छात्र भी अच्छी आर्थिक स्थित वाले परिवारों से आते हैं। उनसे अच्छा खासा शुल्क वसूला जाता है। सरकारी विद्यालय में बालक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते हैं। अतः आय के बगैर व्यय सम्भव नहीं हो पाता। बस यही अंतर है तुम्हारे और लाली के विद्यालय में, और हाँ लाली के विद्यालय में शैक्षिक दृष्टिकोण से समृद्ध व शैक्षिक गुणवत्ता में खरे उतरने वाले शिक्षक ही प्रवेश पाते हैं। तुम्हारे यहां शिक्षकों का ऐसा कोई लिखित परीक्षण नहीं होता, सिर्फ अंग्रेजी भाषा बोलाचाल में महारत होनी चाहिए। उन्हें सेवा का अवसर मिल जाता है।

यह अंतर तुम्हें समझ में आ भी गया होगा कि कैसे लाली सभी प्रश्नों के सही उत्तर सहजता से दे रही थी। क्यों लाली बेटा आपके विद्यालय के ही शिक्षकों की ही शिक्षा का असर है ना ये?''

''हमारे विद्यालय में बहुत अच्छी पढ़ाई होती है। जी हाँ दादाजी।'' लाली ने खुश होकर जवाब दिया। लीना कुछ मायूस सी हो गई।

''अच्छा बेटी! अब बहुत देर हो गई। भोजन की मेज पर खाना आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। लाली बेटा आज आप भी यहाँ लीना के साथ खाना खा लो।'' लाली ने भरपूर नजर भोजन की मेज पर डाली। सुसज्जित मेज जिस पर भांति भांति के पकवान जिस

पर पारदर्शी क्राकरी में बड़ा ही आकर्षक दृश्य दिखा रहे थे। जिसे देखने के बाद लाली ने कहा ''नहीं दादाजी! मेरी माँ भी मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी अभी तो मुझे घर जाना ही होगा। बहुत देर हो गई है। अच्छा जीजी अब मैं शाम को खेलने आऊंगी,'' कहकर वह अपने घर को सरपट दौड़ गई।

दादाजी ने लीना को भोजन की मेज की ओर बड़े प्यार से धकेला। ''दादाजी मुझे भूख नहीं है। मैं तो अपने शाला की हर कक्षा में उपस्थित रही हूं, घर पर भी सभी कुछ दोहराया है। पर पर्चे में पूछे गये प्रश्न तो अधिकतर हमें समझाए ही नहीं गये थे। वह आँखें तरेरते हुए बोली। मुझे तो बड़े होकर प्रशासनिक अधिकारी बनना है। अब मैं भी लाली के विद्यालय में ही पढ़ने जाऊंगी।''

''ठीक है पर वहाँ टाटपट्टी पर बैठना होता है बच्चों को।'' ''हाँ वह तो है। ठीक है, मैं थोड़ा सोचती हूँ।'' ''चलो, पहले खाना खा लो फिर सोचना। नहीं नहीं दादाजी खाने के बाद तो नींद आने लगती है। फिर कैसे सोचूंगी?'' लीना दादाजी को वहीं छोड़ उछलती हुई अपने कमरे में पहुँच गई। दादाजी वहीं खड़े रह गए, लीना के मन की बात समझना अब उनके बस का भी नहीं, वे भी धीरे–धीरे अपने कमरे में चल दिए।

अचानक बरामदे की खिड़की से आती हवा रेशमी परदों को लहराने पर विवश कर गई। श्वेत रंग के रेशमी परदे सुनहरी किनारी के साथ झूम रहे थे। अच्छा ही है बेटा बहु अभी घर में नहीं है। वरना तुरंत ही बरामदे की खिड़की बंद करने का आदेश जारी हो जाता। इतना खूबसूरत दृश्य कभी कभार ही देखने को मिलता है। घर में लगे ए.सी. ने तो इस दृश्य पर स्थायी विराम लगा रखा है। चलिए, खैर यह भी समय का तकाजा है।

शाम को बगीचे में गुलाबी रंग की फ्रिल वाली फ्रॉक पहने लीना लगभग दौड़ती हुई आई, ''मैनें सोच लिया दादाजी!'' ''क्या बेटा?'' ''यही कि अब मुझे लाली के

विद्यालय में जाना है, एक बढ़िया उपाय सूझा है मुझे।''

''अरे बिटिया रानी मात्र सुझाव से काम नहीं चलता शिक्षा के लिए पूरा गणित बैठाना पड़ता है।''

''दा...दा...जी! आप भी ना, माना मेरा गणित का पर्चा बिगड़ा है मगर मेरा गणित इतना कमजोर नहीं है अच्छे से पूरा हिसाब बैठाया है। आप बस ध्यान से सुनिए...

देखिए मेरा मासिक शुल्क है ४ हजार। बस के लगते है २ हजार निर्धन कोश के लिए दान देते है ५ हजार तो देखिए ४०००+ १२= ४८०००+ २०००+१२=२४०००+५००० कुल मिलाकर हुआ ७७ हजार लाली के विद्यालय में शुल्क लगता नहीं है। पास में होने से मैं और लाली पैदल ही शाला पहुंच जायेगें। बच गए पूरे ७७ हजार।''

''ओ...हो...बड़ा जोरदार गणित लगाया है। अरे...यह तो कुछ भी नहीं आगे भी देखिए मेरा कमाल, पिताजी बता रहे थे कि इस बार मेरे जन्मदिन पर नया उद्योग लीना इंटरप्राईजेस लगभग ८० लाख का प्रारम्भ करने वाले हैं। है कि नहीं....?'' ''हाँ हाँ शुरु तो कर रहे है।''

''उद्योग मेरे नाम से, जन्मदिन भी मेरा तो, उसमें थोड़ी तो मेरी भी चलेगी ना? ८० लाख में से बस आठ लाख इतने से'' तर्जनी ओर अगूंठे को एक साथ मिलाकर मुँह बिचकाते हुए, लीना बोली ''हटा दो।''

''कहाँ हटा दो? अरे दादाजी समझा करो ना मेरा मतलब है कम कर दो और आठ लाख ७० हजार में से लाली के शाला की टेबल कुर्सी बनवा दो। तो मुझे टाटपट्टी पर नहीं बैठना पड़ेगा। हमारी शाला के सारे बच्चे टेबल कुर्सी पर बैठेगें तो कितना खुश होगें। सब बच्चे ढंग से पढाई भी कर पायेंगे।''

''अरे वाह हमारी गुड़िया रानी का यह विचार भी शानदार है और गणित भी अद्‌भुत'' कहते हुए उन्होंने लीना को दोनों हाथों में उठाते हुए हवा में उछाल दिया एकदम से खिलखिला पड़ी लीना।

लीना की खिलखिलाहट दादाजी को भीतर तक रोमांचित कर गई। जिससे एक विचार उनको भी आ गया वो बोले ''बिटिया रानी! जब तुम्हारे ८ लाख ७० हजार से टेबल कुर्सी शाला में आ सकते हैं तो मैं तुम्हारा दादा हूं मुझे तो कम से कम चार गुना नहीं तो दुगुना ही सही गणित तो बैठाना पड़ेगा ७० लाख ५४ हजार मेरे भी बनते हैं। इसमें दो पुस्तकालय और पुस्तकें, कम्प्यूटर, खेल सामग्री भी आ जाएगी।'' ''हाँ दादाजी'', चिंहुकते हुए लीना बोली ''आप कितने अच्छे है?''

''पर बिलकुल बुद्धू भी...'' ''क्यों?'' दादाजी ने मूंछे तरेरते हुए कहा। ''मैं तो शाला की शुल्क बचाकर और अपने नाम के उद्योग में से बचाकर हिसाब लगा रही थी। पर आप तो कोई शाला भी नहीं जाते कहाँ से शुल्क के पैसे बचाएगें? ओर आपके नाम का कोई उद्योग भी नया नहीं डल रहा है। आपका गणित कैसे बैठेगा? लीना ने भोलेपन से प्रश्न किया।

दादाजी की आँखें भीग गई, उन्होंने लीना को सीने से लगाते हुए कहा...''चिंता न करो बिटिया रानी! विद्यालय के शुल्क की तो उम्र रहीं नहीं। नया उद्योग भी नहीं है मगर पुराने उद्योग की कमाई तो है। बैंक में से उसके ब्याज को निकालकर मैं भी थोड़ा बहुत जोड़ तोड़ बिठा लूंगा।

अब हम दादा पोती मिलकर अपना कमाल का गणित बैठाएगें। आज गणित का पर्चा हो सकता है हमारी बिटिया का बिगड़ गया हो। मगर गणित नहीं बिगड़ा है। हमें हमारी बिटिया रानी के गणित पर बड़ा गर्व है...आओ इसी खुशी में लड्डू हो जाएं जो तुम्हारी दादी ने आज ही बनाए हैं।'' लाली को भी साथ में बुलालो।

''बिलकुल दादाजी वो भी बस अभी आने ही वाली है।''

● **अजमेर (राज.)**

छोटा बड़ा

नौसेना के हैं खड़े, छोटे बड़े जहाज।
दुश्मन बचे न देश का, गिरे जो इन की गाज।।

बच्चो, युद्ध के लिए तैयार खड़े इन जलपोत को छोटे से बड़े क्रम में जमाओ।

(उत्तर इसी अंक में)

परमवीर चक्र विजेता

मे. शैतानसिंह

आलेखः विजयसिंह माली

परमवीर चक्र युद्ध के शौर्य के लिए भारत का श्रेष्ठतम सम्मान है। यह सम्मान केवल असाधारण वीरता, साहस, शौर्य के लिए दिया जाता है। २६ जनवरी १९५० को देश के राष्ट्रपति द्वारा इसका प्रारम्भ किया गया। विजेता को यह पुरस्कार राष्ट्रपति स्वयं प्रदान करते हैं। यदि विजेता को मरणोपरान्त यह सम्मान मिलता है तो उसकी वीरांगना या परिवार के किसी अन्य सदस्य को दिया जाता है।

परमवीर चक्र कांस का बना गोलाकार पदक होता है। इसके चारों और किनारों पर देवराज इन्द्र के अस्त्र वज्र का चित्र उभरा होता है तथा बीच में हमारा राष्ट्रीय चिन्ह अशोक स्तंभ होता है। इसके पीछे हिन्दी व अंग्रेजी में परमवीर चक्र अंकित रहता है जिसके हर शब्द के बीच में दो कमल पुष्प भी उकेरे होते हैं। यह मेडल बाई छाती पर सादे बैंगनी रंग के रिबन द्वारा लटकाया जाता है। यह रिबन सवा इंच चौड़ा होता है। यदि विजेता को दूसरी बार में एक पट्टी और जोड़ दी जाती हे। जिस पर चक्र लटकाया जा सके। यदि रिबन अकेला पहना जाए तो इन्द्र के वज्र का प्रतिचित्र इस पर लगाया जाता है। पदक में अंकित वज्र दधीचि के देहदान से प्राप्त अस्थियों से निर्मित अमोघ अस्त्र था जिसे वृत्रासुर को मारने के लिए इन्द्र द्वारा उपयोग में लाया गया था। अशोक स्तंभ हमारा राष्ट्रीय चिह्न है। रिबन का बैंगनी रंग नौ सेना के व वायुसेना के रंगों के मिश्रण से बना है।

परमवीर चक्र का डिजाईन सावित्री खानोलकर ने तैयार किया। प्रथम परमवीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा को मरणोपरान्त दिया गया जो पाकिस्तान के विरुद्ध जम्मू कश्मीर की लड़ाई में ३ नवम्बर १९४७ को मात्र २५ वर्ष की आयु में बलिदान हो गए राजस्थान के कम्पनी हवलदार मेजर पीरूसिंह को १९४८ में मेजर शैतानसिंह को १९६२ में मरणोपरान्त परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

मेजर शैतानसिंह का जन्म १ दिसम्बर ९२४ को राजस्थान के जोधपुर जिले की फलौदी के बनासर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम कर्नल हेमसिंह था। शैतानसिंह ने बाल्यकाल से ही फौज में भर्ती होने का फैसला कर लिया था। १ अगस्त १९४९ को कुमाऊ रेजीमेंट बिग्रेडियर टी. एन.रैना के नेतृत्व में अम्बाला से जम्मू कश्मीर पहुंची। कुमाऊ रेजीमेंट को संसार के सबसे ठंडे व ऊँचे युद्ध क्षेत्र में चीनी सेना का प्रतिरोध करना था।

मौसम की प्रतिकूलता, युद्धभूमि की दुर्गमता व हथियारों की कमी के बावजूद मेजर शैतानसिंह व उनकी सी कम्पनी १३ कुमाऊ ने यह फैसला कर रखा था कि वे हर हालत में अपने क्षेत्र रेजांगला की रक्षा करेगे व अगर दुश्मन ने हमला किया तो मुँह तोड़ जवाब देंगे।

१८ नवम्बर १९६२ को चीनी सैनिकों ने भारी तोपों, मोर्टारों व बंदूकों के साथ रेजांग ला पर हमला किया जैसे ही चीनी सैनिक भारतीय सैनिकों की मारक सीमा में आए १३ कुमाऊ की सी बटालियन ने चीनियों की लाशों के ढेर लगाने शुरु कर दिए। कुमाउनियों की हर बन्दूक गरज रही थी चीनियों का अचानक हमला विफल हो गया तो उन्होंने खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे की तर्ज पर भारतीय बंकरों को ढहाना शुरु किया। रेजांगला में एक भी बंकर सुरक्षित नहीं बचा। दुश्मन की भीषण गोलाबारी में भी मेजर शैतानसिंह के नेतृत्व में भारतीय वीर डटे रहे। जब सामने से मोर्टारो का हमला आगे की सैन्यपंक्ति को साफ कर गया तो चीनी फौजों ने अपना ध्यान प्लाटून के बीच में केन्द्रित किया।

मेजर शौतानसिंह चीनी सेना से पूरी तरह से घिर गए। फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारते हुए अपनी टुकड़ी को पुनर्गठित किया। भारी खतरा उठाते हुए एक प्लाटून से दूसरी प्लाटून में जाकर सैनिकों का मनोबल बढ़ाते रहे। उन्हें अपनी नेतृत्व क्षमता से हौंसला दिया कि वह आखिरी पल तक जुझ जाए। ऐसा करते हुए वे पूरी तरह जख्मी हो गए उनकी एक बाँह व पेट में गोलियाँ लगी। युद्ध चरम पर था। एक भारतीय सैनिक दुश्मन के चार पांच सैनिकों को मार रहा था। मेजर शैतान सिंह अपनी अप्रतिमा वीरता व नेतृत्व का परिचय दे रहे थे। अचानक मशीनगन के वार से घायल होकर गिर पड़े उनके साथियों ने उन्हें पीछे सुरक्षित ठिकाने पर पहुंचाने का प्रयास किया लेकिन इतना अवसर नहीं था दुश्मन का आक्रमण जबरदस्त था मेजर शैतानसिंह ने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे उनकी चिन्ता छोड़ देश की चिन्ता करे। मेजर शैतानसिंह का अदम्य साहस, कुशल नेतृत्व व अनुकरणीय कर्तव्य निष्ठा अपनी कम्पनी के लिए प्रेरणा स्रोत बनी और कम्पनी का अंतिम सिपाही अपनी अंतिम सांस तक लड़ता रहा।

बर्फ से ढके रण क्षेत्र में मेजर शैतानसिंह का मृत शरीर ३ महिने बाद मिला। उनका शव हवाई जहाज द्वारा जोधपुर लाया गया तथा राष्ट्रीय वीर की तरह पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उनकी वीरता के लिए उन्हें मरणोपरान्त परमवीर चक्र प्रदान किया गया।

मेजर शैतानसिंह का व्यक्तित्व कृतित्व व वीरता की कहानी प्रेरक, अभिनदेनीय व अनुकरणीय है। सचमुच हम उनसे यह प्रेरणा लें।

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में
मांगें मातृभूमि से यह वर
तेरा वैभव अमर रहे माँ
हम दिन चार रहें न रहें।

● सादड़ी (राज.)

।। श्रद्धांजलि ।।

श्रीमती मालती शर्मा का निधन

पुणे। सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं लोक संस्कृति पर प्रचुर लेखन करने वाली देवपुत्र गौरव सम्मान सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित पुणे की श्रीमती मालती शर्मा का निधन १३ अक्टू. २०१८ को पुणे में ८० वर्ष की आयु में हो गया। वे देवपुत्र परिवार की वरिष्ठ लेखिका थीं।

देवपुत्र परिवार उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

(भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत)

अभ्यास का महत्व

बाल प्रस्तुतिः शशांक देव सिंह बघेल

सौरभ प्रतिदिन फुटबाल खेलने जाता था पर वह अच्छा नहीं खेल पाता था अतः कभी कभी उसे अपनी टीम के कप्तान से डाट भी खानी पड़ती थी और वह घर आकर रोने लगता था।

एक दिवस वह जब फुटबॉल खेलने गया तो वह किसी को गोल की और बढ़ने से रोकने और गोल करने की सोच कर गया किन्तु जब एक खिलाड़ी के पास गेंद आ रही थी तो वह भी मारने के लिए गया तो वह खिलाड़ी हट गया किन्तु सौरभ गेंद को छू ही नहीं पाया गोल के करीब होने से विपक्षी खिलाड़ी ने गोल मार दिया उसे फिर डाँट खानी पड़ी।

वह घर से थोड़ी दूर जाकर बैठ गया जहाँ उसके माता–पिता बैठे थे और रोने लगा अपने को दोष देने लगा मैं कितना खराब खेलता हूँ मुझे अच्छा खेलना है। उसके माता पिता ने उसे रोते हुए देखा तो पूछा– ''क्यों रो रहे हो बेटा? पिताजी के बगल में बैठी माँ से वह बोला– मुझे अच्छा खेलना है मैं अच्छा क्यों नहीं खेल पाता माँ?'' सौरभ ने कहा।

तभी पिताजी बोले–''बेटा! तुम अभ्यास क्यों नहीं करते। तुम अभ्यास करो जरूर अच्छा खेल पाओगे।'' वह बोला ''पिताजी! अभ्यास से क्या होता है!'' ''अभ्यास से हमें किसी चीज की निरंतर करते रहने की आदत व कुछ भी करने की क्षमता प्राप्त होती है।'' पिताजी हँसते हुए बोले।

''अभ्यास से हम क्या बन सकते हैं पिताजी!'' सौरभ ने आश्चर्य से पूछा।

पिताजी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– ''अभ्यास से हम बड़े ज्ञानी विद्वान आदि बनते हैं खिलाड़ी भी तुम मनीष को ही देख लो।''

सौरभ– ''क्या वे भी अभ्यास करते होंगे।''

पिताजी बोले– ''हाँ क्या उनसे कुछ बनता था उन्होंने भी अभ्यास किया और आज विख्यात फुटबालर है।''

तभी माँ बोली– ''तुम भी प्रयास करो।''

इन बातों का उस पर बड़ा असर हआ वह ७वीं कक्षा का छात्र था। वह प्रतिदिन ५ से ५.३० शाम प्रयास करता। ५.३० से ६ बजे तक खेलता। एक दिन उसने अभ्यास के दौरान गोल मार दिया उसे प्रथम बार शाबासी मिली।

अब वह और मेहनत कर अभ्यास करने लगा वह जिनके साथ खेलता था अब वह उन सबसे अच्छा खेलने लगा वह फिर भी अभ्यास करता था।

एक दिन की बात है उसने अपने माता–पिता से कहा– ''मैं सच में अभ्यास से अच्छा फुटबालर बन गया हूँ।''

माँ ने कहा– ''हाँ बेटा! पर अभ्यास मत छोड़ना।''

पिताजी ने भी यही कहा – ''बेटा! माँ ने सही कहा, अभ्यास कभी नहीं छोड़ना।''

जी माँ कहते हुए वह चला गया अपने अभ्यास के लिए।

● उतैली (म.प्र.)

भोलू का भोलापन

चित्रकथा- संकेत

मालिक लौटा तब
हे भगवान, तुमने वह कीमती दीपक भिखारी को दे डाला...
मूर्ख भिखारी उसे पांच दस रुपये में बेच देगा जबकि वह हजार रूपयों का है...
गलती हो गई मैं उस भिखारी को ढूंढता हूँ...
आखिर वह मिला
ए, रुको!
सुनो भाई, यह दीपक बेकार समझ तुम्हें दे दिया पर यह हजार रुपये कीमत का है...
वापस लोगे इसे?
नहीं भाई... वापस लेने नहीं आया, तुम्हें बताने आया था कि इसे अच्छी कीमत पर बेचना ठगे मत जाना...
समाप्त

वेशभूषा में क्या रखा है?

प्रसंग : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

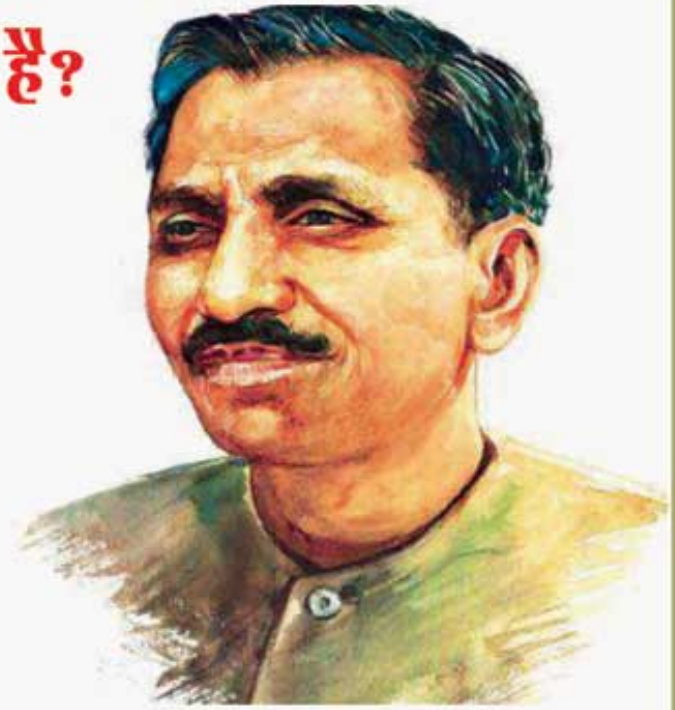

सन् १९६१ की बात होगी। उस समय पं. दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक दल भारतीय जनसंघ के अखिल भारतीय महामंत्री थे। उ.प्र. के सहारनपुर जिले में चन्दौसी कालेज में उनका भव्य स्वागत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पं. जी की वेषभूषा उनके पद के अनुरूप नहीं थी। वही पुरानी धोती, कुर्त्ता और पुरानी घिसी पिटी चप्पल। सहारनपुर के आयोजकों को भी यह उचित नहीं लगा। वे लोग तुरंत बाजार से एक सुन्दर धोती–कुर्त्ता और नई जोड़ जूता ले आए। जब यह सामान पं. दीनदयाल जी ने देखा तो हँसते हुए प्रेमभाव से बोले– ''अरे भाई! पूरे उत्तर प्रदेश का दौरा कर आया और मुझे किसी ने भी नहीं रोका। आज आप लोगों का शहर इतना बड़ा हो गया है? चलो भाई, तुम लोगों के कहने पर परिधान पहन लेता हूँ।''

जनसभा से वापस लौटने के उपरान्त उन्होंने उन सभी वस्त्रों को उतार कर भली प्रकार समेटकर रख दिया और अपने वही पुराने वस्त्रों को फिर से पहन लिया। वहां के स्थानीय कार्यकर्त्ता मनोहरलाल जी, जो नए वस्त्र लेकर आए थे, हाथ जोड़ते हुए बोले पं. जी! हम सबको आप इतना लज्जित न करें, इन वस्त्रों को क्यों उतार दिया?''

दीनदयाल जी ने बड़ी प्रसन्नता से उत्तर दिया– ''मनोहरलाल जी! क्या आपने यह वस्त्र साथ ले जाने के लिए दिये थे?''यह पंडित जी की सरलता थी। बड़ी मुश्किल से वे उन कपड़ों को ले जाने को तैयार हुए थे।

एक बार इसी तरह वे नौकरी के लिए प्रशासनिक सेवा हेतु साक्षात्कार के लिए गए हुए थे, तो उस समय भी उनकी वेशभूषा अत्यंत सामान्य थी। वही धोती कुर्त्ता और संघ की काली टोपी। उपस्थित साथियों ने उपहास करते हुए कहा– ''वाह! पंडित जी आए हैं।'' परन्तु जब बाद में परिणाम आया तो वे सभी प्रतियोगियों में सबसे ऊपर प्रथम श्रेणी में आए। खैर उन्होंने नौकरी नहीं की और संघ प्रचारक का जीवन जीना उचित समझा।

पं. दीनदयाल जी साधुवृत्ति के थे। उनका मानना था कि बाहरी दिखावे पर हम लोग बहुत ध्यान देते हैं। इसके पीछे यह बात प्रमुखता से कही जाती है कि व्यक्ति की वेशभूषा और चमक देखकर नहीं मिलती बल्कि उसके ज्ञान और बौद्धिक क्षमता को ध्यान में रखकर दी जाती है। उपयुक्त सफलता हेतु परिधान से अधिक आवश्यक ईमानदारी और बुद्धि कौशल है।

● कानपुर (उ.प्र.)

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

राजस्थान का राज्यवृक्ष :

खेजड़ी

डॉ. परशुराम शुक्ल

सूखे गर्म देश में मिलता,
पौधा रेगिस्तानी।
आओ बच्चों! तुम्हें सुनाएँ,
इसकी नई कहानी।
चमत्कार से भरा पेड़ यह,
वन्डर ट्री कहलाता।

पेड़ सूखते गर्मी में, यह
हरा-भरा लहराता।
यह बारह मीटर तक ऊँचा,
सूखी डालों वाला।
गहरी जड़ें भूमि में जाकर,
देतीं रूप निराला,
मिट्टी की उर्वरा शक्ति को,
बहुत बढ़ाने वाला।
भू संरक्षण जल संरक्षण
करता यह मतवाला।
अंग सभी उपयोगी इसके,
औषधि खूब बनाते।
गठिया-खाँसी, ट्यूमर तक को
जड़ से दूर भगाते।।

• भोपाल (म.प्र.)

महिमा तुम महान हो

कहानी : विजयकांत मिश्रा

मुकुट ''अरे! पत्तू भइया! उठ, क्या यार घोड़े बेच कर सो रहे हो? मुंबई से निकल कर बड़ौदा आ गया है।''

सुनील ''अरे! सोने भी दे, मुंबई में तो सोने को भी नहीं मिला।''

''अरे! बड़ौदा की चाय बहुत जोरदार होती है। मैं जब भी यहाँ छोटे भाई के पास बड़ौदा आता हूँ तो बड़ौदा जँ. की चाय जरूर पीकर जाता हूँ। तेरे साथ मैं भी फीकी चाय पिऊँगा। अतः दो चाय मंगा ली है।''

चाय पीते पीते अचानक मुकुट बोला– ''अरे! पत्तू, तेरी सीट के नीचे ये खुसर–पुसर क्या हो रहा है?''

सुनील ''अरे! कुछ भी नहीं है मित्र! पत्तू चाय बहुत जोरदार है पीने दे।''

''अरे! जब मैं कह रहा हूँ कि सीट के नीचे कुछ है, तो सुन और देख क्यों नहीं रहा है? देख किसी का हाथ भी दिख रहा है।'' हम ने सीट के नीचे झाँका। वहाँ हमारे सामान के पीछे एक ६ साल की लड़की सिकुड़ कर सो रही थी। हमने आवाज लगाई।

''अरे! कौन है? बाहर निकलो फटाफट।''

जब तीन चार बार जोर जोर से आवाज लगाई तो एक ६ साल की लड़की बाहर आई। वो मेले कुचेले, फटे फटाए कपड़े पहनी थी। वो थकी थकाई सी थी, ओर शायद भूख सी भी लग रही थी। उसको खड़े खड़े भी नींद आ रही थी।

हमने उसका नाम, पता पूछा।

वो टूटी फूटी भाषा में क्या बोली? हमें कुछ समझ में नहीं आया। उसकी बोली से जरूर लग रहा था कि वो वनवासी क्षेत्र की है। अब वो घबरा कर रोने लग गई थी।

पत्तू ''अब चुप हो जाओ, खिड़की के पास जाकर बैठ जाओ।''

वह समझी नहीं।

सुनील ने उसे इशारे से समझाया कि उधर जाकर बैठ जाओ।

इतने में पूरे कम्पार्टमेंट में उस लड़की के बारे में शोर मच गया।

जरा जरा सी देर में हर कोई आकर उसे देखने लगा।

''अरे! ये तो कोई चोर है जेबकट है।''

''नहीं भाई ये तो बदमाश है।''

इतने में टी.टी.ई. (यात्रा टिकिट परीक्षक) भी आ गया। उसे भी लोगों से पता चला कि कोई गुमनाम लड़की हमारी सीट के नीचे सोती हुई पाई गई है।

टी.टी.ई.– ''ये आपके साथ है?''

मुकुट ''नहीं, अभी सीट के नीचे से निकली है।''

टी.टी.ई.– ''मैंने आपके टिकट देखे थे। आप तो मुंबई से कोटा जा रहे हैं।''

टी.टी.ई.– ''ऐ लड़की! कौन है तू? कहाँ जा रही है?''

लड़की ने रोते हुए क्या बोला किसी को समझ में नहीं आया।

टी.टी.ई.–''ऐ लड़की तू ऐसे नहीं मानेगी'', वह हाथ उठाकर उसे मारने दौड़ा।

लड़की उठ कर मुकुट के गले लग गई।

अचानक सुनील ने उठकर टी.टी.ई. का हाथ पकड़ा।

''आप लड़की के साथ मारपीट नहीं कर सकते। अभी आपका फोटो रेल मंत्री जी को भेजता हूँ।''

हम सभी टी.टी.ई. से तकरार करने लगे।

आप हमसे बात करें। आप लड़की के साथ मारपीट नहीं कर सकते।

टी.टी.ई. ''आप नहीं जानते की आजकल रेलगाड़ी में प्राय छोटे लड़के–लड़कियाँ चोरी बदमाशी करते हैं। मौका पाकर यात्रियों का सामान पार कर लेते हैं।''

टी.टी.ई.''रतलाम आने वाला है। आप इसे रतलाम में उतार दें। वहां २० मिनट गाड़ी रुकेगी। ये लड़की आपके लिए बहुत बड़ी जोखिम है। फिर आप जानो?''

टी.टी.ई. के जाने के बाद वो लड़की भी मुकुट के पास से हटकर खिड़की पर जा बैठी।

रतलाम आ चुका हमने लड़की को रतलाम के उतरने को कहा। किन्तु वो कुछ नहीं समझी। कुछ यात्रियों ने कहा इसे रेल्वे पुलिस थाने में दे दो, वे खुद इसे इसके घर पहुँचा देंगे।

मुकुट और पत्तू दोनों ने लड़की को चाय नाश्ता कराया।

थाने में पहुंच कर उन्होंने देखा कि पुलिस अधिकारी सामने कुर्सी पर पाँव फैलाकर बैठा है।

''महोदय! हम सेवानिवृत्त शासकीय अधिकारी है।'' फिर हमने लड़की के बारे में सब कुछ बता दिया।

अधिकारी– ''हम क्या करें? आप जहाँ से लेकर आये हो, वहीं छोड़ कर आओ।''

पत्तू ''श्रीमान! आपकी भी तो कुछ जिम्मेदारी है, अब हम लड़की को कहाँ लेकर जायेंगे।''

मुकुट व पत्तू वहाँ से निकल लिये।

बस गाड़ी निकलने को ही थी। हम दोनों ने भाग कर रेलगाड़ी पकड़ी।

हम दरवाजे के आगे चैन की साँस ले रहे थे कि पीछे से लड़की ने भी भाग कर गाड़ी पकड़ ली।

''अरे! तू कैसे वहाँ से भाग आई!''

गाड़ी तेज रफ्तार पकड़ी चुकी थी।

गाड़ी आगे कोटा में ही रुकने वाली थी।

औ अब जो करना था वो कोटा ही करना था।

गाड़ी में लड़की का भी टिकट कटा लिया।

सभी चिंतित थे कि कोट में ये जहाँ भी रहेगी वहाँ भूचाल तो आएगा ही।

पत्तू ने कहा ''अभी जब तक इसका बंदोबस्त नहीं हो जाता ये मेरे घर पर ही रहेगी।

घर पर पहुँचते ही श्रीमती जी ने चुनौती दे दी। ''इसका तुरंत कहीं और व्यवस्था करो। जरूरत क्या थी इस अनपढ़ गँवार लड़की को घर लाने की।''

खैर! इसे नहला धुला करके नए कपड़े पहनाए। कुछ दिन श्रीमती जी ने उसे कैसे नहाना, धोना, कपड़े पहनना है सिखाया किन्तु बोलचाल में अभी भी दिक्कत आ रही थी।

नितेश के जान पहचान के एक अधिकारी जिलाधीश कार्यालय में थे। वो बाल विभाग भी देखते थे हम लड़की को उने पास ले गए। वे बोले ''आप सही समय और सही जगह पर आए। ऐसे निराश्रित लड़के लड़कियों के लिए हमने अपना घर बना रखा है। आप कुछ सरकारी खानापूर्ति करके इस लड़की को वहाँ रख सकते हैं। आप सभी बारी बारी से वहाँ जाकर इसकी देखभाल भी कर सकते हैं। क्योंकि इसको किसी के भी घर रखना गैर कानूनी है।

तत्पश्चात् आप में से इसे कोई गोद भी ले सकते हैं।

हम सभी के बच्चे पढ़ लिख कर बाहर चले गये थे। केवल हम दम्पति ही रह गये थे।

उपरोक्त बाबाद कुछ अन्य दोस्तों के भी फोन आए। कई ने हमें उलाहना भी दिया किन्तु हम घबराए नहीं।

नारायण, नितेश, पत्तू, मुकूट, जय, नरेश, सुनील सभी अपनी श्रीमती जी के साथ लड़की को

'अपना घर' छोड़ने गए। क्योंकि हम पक्के दोस्त थे। पारिवारिक रूप से सब एक दूसरे को समझते थे।

अपना घर में उपरोक्त बाबत सभी सूचनाएँ पहुँच चुकी थीं। वहाँ पूर्व तैयारियाँ भी थी। वहाँ सभी फार्म भरने के बाद उसका नाम महिमा रख दिया गया । हमने प्रबंधक को स्पष्ट लिख कर दिया था कि महिमा की देखरेख में कोई कमी नहीं आनी चाहिए। आप इसको हिन्दी–अंग्रेजी, स्किल डेवलपमेंट सिखाने के लिए कोचिंग भी रख लें। उसका शुल्क हम प्रतिमाह देगे। आप इसे किसी को भी गोद नहीं देंगे। हममें से ही कोई इसे गोद लेगा। आप प्रतिदिन निरीक्षण करके इसके समाचार हमें सूचित करेंगें। सिखाने के लिए हमारी श्रीमती भी आगे आ गई।

श्रीमती नारायण बोली ''मैं कानून की स्नातक हूँ मैं महिमा का कानून संबंधी काम देखूंगी।''

श्रीमती नितेश बोली ''मैं अंकेक्षक हूँ मैं आर्थिक संबधी काम देखूंगी। श्रीमती पत्तू और मुकुट, जय, नरेश हम इसके पढाई लिखाई वस्त्र, कौशल विकास का काम देखेंगी।'' श्रीमती सुनील बोली ''मैं महिमा के लिए स्वादिष्ट भोजन बना कर भेजूंगी।''

अपना घर प्रबंधक ने कहा ''महिमा की तो किस्मत खुल गई है, इतने सारे पालक।''

महिमा चुपचाप थी, हम सब भीगी पलकों के साथ महिमा को अपना घर छोड़ कर अपने घरों को रवाना हुए। अब हम सब बारी बारी से अपना कर्तव्य समझ कर महिमा की देखरेख कर रहे थे। विशेष पर्व पर पूर्वानुमति से हम सब बारी बारी से महिमा को घर पर भी ले आते थे। हम सभी को बेहद चाहती थी हम सब भी उसे अपना ही मानते थे।

समय पंख लगा कर उड़ता जा रहा था। महिमा पढाई लिखाई में बहुत तेज थी। इस बीच हम सभी की सर्व सम्मति से नारायण ने सभी कानूनी कार्यवाही करके महिमा को गोद ले लिया था।

महिमा अब मेडिकल की कोचिंग कर थी नारायण ने महिमा के भविष्य को देखते हुवे हॉस्टल में भर्ती करा दिया था। हम सब भी उसका ध्यान रखते थे। महिमा की मेहनत रंग लाई।

महिमा का एम्स में चयन हुआ था।

हम सभी अपना अपना काम रोक कर हर्षित मन से महिमा को एम्स दिल्ली छोड़ने ला रहे थे। अब महिमा हम सभी की है हम सब महिमा के हैं।

महिमा तुम महान हो।

● कोटा (राज.)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

(जयंती : २५ दिसम्बर)

महामना मदनमोहन मालवीय

प्रसंगः रेणु घोष

डॉक्टर अपने रोगियों को देखने में व्यस्त थे, अचानक एक बालक परिचित डॉ. के पास हाँफते हुए पहुँचा और कहा ''डॉ. जल्दी चलिये उसे बहुत चोट लगी है तथा बहुत खून बह गया।'' डॉ. साहब तैयार होकर पूछा. ''वह कौन है? तथा कहाँ है?'' बालक ने कहा ''वह मेरे मोहल्ले का कुत्ता है और गली में पड़ा है।'' डॉ. साहब झल्ला कर बोले, ''मैं क्या जानवर का डॉ. हूँ?'' तब बालक ने कहा, ''कुत्ता भी एक प्राणी है, तथा उसे भी पीड़ा होती है।'' तब डॉ. साहब ने एक शीशी में दवाई दी, और कहा, ''जाओ इसी दवाई से कुत्ता अच्छा हो जाएगा।'' बालक ने कुत्ते की सेवा कर पूर्ण स्वस्थ कर दिया। वही बालक बड़ा होकर महामना मदन मोहन मालवीय के नाम से विख्यात हुये। जिन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। जहाँ समस्त विश्व के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने हेतु आते हैं।

● इन्दौर (म.प्र.)

पानी होगा तो दाल गलेगी

प्रसंगः नितेश नागोता

मदनमोहन मालवीय के जीवन का व्रत था, हिन्दू विश्वविद्यालय को अधिक से अधिक विकसित करना। उसके लिए वे राजा महाराजाओं के पास जाते थे। हैदराबाद का निजाम देशी रियासतों में सबसे अधिक धनाढ्य था। पर वह था एक नम्बर का कजूंस। मुसलमान होने के कारण हिन्दुओं के कार्य के प्रति उसके मन में तनिक मात्रा भी आकर्षण नहीं था।

मदन मोहन मालवीय हैदराबाद पहुंचे। निजाम ने मिलने के लिए समय दिया। जब वे वहाँ पहुँचे। मालवीय जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय का रूपरेखा प्रस्तुत की। सुनने के बाद निजाम ने कहा मालवीय जी! यहाँ आपकी दाल नहीं गलेगी।

मालवीय जी ने मुस्कुराते हुए कहा- हुजूर! अगर पानी होगा तो दाल गल जाएगी। अन्त में कंजूस निजाम को चन्दा देना ही पड़ा।

प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति अपनी प्रतिभा से लोगों के अन्तर्मानस को जीत लेते हैं।

● भवानीमंडी (राज.)

पुस्तक परिचय

सरस बाल गीत - सुप्रसिद्ध बाल गीतकार **श्री रामगोपाल राही** के ५५ सुन्दर बालगीत जिन्हें विषयगत विविधता और मनोहर प्रस्तुति के कारण बच्चे और किशोर रुचिपूर्वक पढ़ेंगे।
प्रकाशन – अरावली प्रकाशन सी– ३७ बर्फखाना, राजापार्क, जयपुर (राज.)

बच्चों में भगवान - सुप्रसिद्ध रचनाकार **श्री जगदीश जोशीला** का बच्चों के लिए रचित प्रथम काव्य संग्रह जिसकी ४२ रचनाओं में समाहित है बाल रुचियों से सम्पन्न अनूठा काव्य संसार।
प्रकाशन – देशभारती प्रकाशन, सी–५८५ गली नं. ७ रेल्वे फाटक के पास, अशोक नगर, शाहदरा, दिल्ली ११००९३

सीखने की कला - सीखने की कला का महत्व बच्चों के लिए सबसे अधिक होता है विद्यार्थी जीवन सीखने के ध्येय का सर्वोत्तम काल है। सीखना सरल बनाने में सहायक **डॉ. मधुकांत** की यह लघु पुस्तिका सब बच्चों के लिए सहायक सिद्ध होगी।
प्रकाशन – एस.एन. पब्लिकेशन, ७/१२, ए–७५, श्रीराम कालोनी, निलोठी एक्स. नांगलोई, दिल्ली

छाई छप्पा छई- बाल साहित्य के समर्थ रचनाकार **श्री आर.पी. सारस्वत** की ५१ बाल कविताओं का संग्रह बालमन को लुभाने, गुदगुदाने और सिखाने वाला है। बच्चे इन रचनाओं को पढ़कर निश्चित ही आनंदित होंगे।
प्रकाशन – नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास, एम.–१६७–१६८, पैरामाउण्ट ट्यूलिप दिल्ली रोड़, सहारनपुर २४७००१ (उ.प्र.)

आओ पढ़े–सरस काव्य शिल्पी **विनीता श्रीवास्तव** की सम्पूर्ण बहुरंगी सुन्दर सज्जा युक्त बालमन को आकर्षित करती ३५ बाल गीत रचनाओं का महत्वपूर्ण संकलन।
प्रकाशन – जागरण साहित्य समिति, जबलपुर (म.प्र.)

लाभकारी वृक्ष - वन महोत्सव में पीपल, जामुन, नीम, तुलसी, मौलश्री, आम, मौसमी और शहतूत आदि के परस्पर संवाद में गूंथकर एकांकी के रूप में डॉ. मधुकांत की रोचकता से वृक्षों का महत्व बताने वाली रचना।
प्रकाशन – मंगल प्रकाशन, एफ ९६, वेस्ट ज्योति नगर, कदमपुरी मार्ग, दिल्ली ११००९४

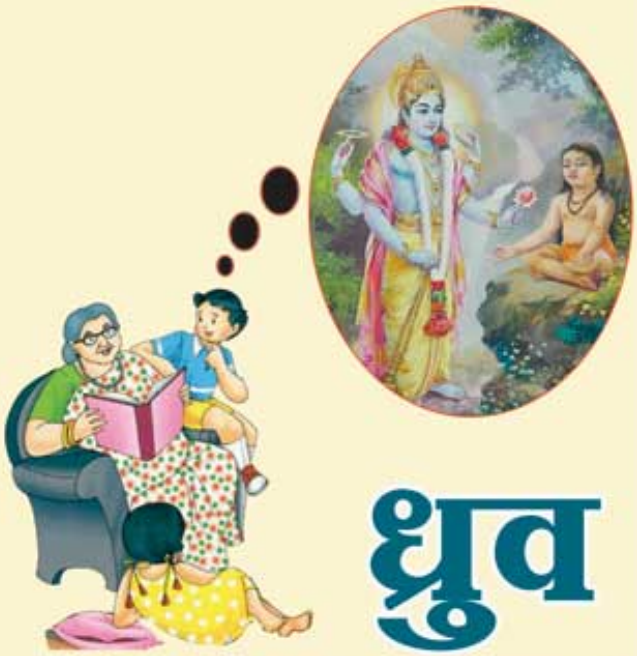

ध्रुव

कविता : आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर 'राजगुरु'

अम्मा ने कल मुझे सुनाई,
अच्छी एक कहानी।
राजा थे उत्तानपाद,
उनकी थीं दो सुन्दर रानी।।
बड़ी सुनीति का बेटा ध्रुव,
सुरुचि का उत्तम राजकुमार।
पिता-गोद में ध्रुव बैठा था,
सुरुचि ने उसको दिया उतार।।
ध्रुव रोया तब भैया ने,
समझाया दुख न कर बेटा।
कर्म करो, उस परम पिता की,
गोद प्राप्त कर लो बेटा।।
माता की सुन सीख चला ध्रुव,
कष्ट बहुत भोगे वन में।
कर्म देख कर उस बालक का,
ईश्वर आये निर्जन में।।
दर्शन देकर ईश्वर ने उस,
बालक को वरदान दिया।
अमर कर दिया ध्रुव को प्रभु ने,
अति ऊँचा स्थान दिया।।

● सिहोरा (म.प्र.)

आपकी पाती

✸ शिवाशंकर तिवारी, नई दिल्ली

देवपुत्र में मिलता है,
विपुल ज्ञान भंडार।
रचनाओं में भरा हुआ हैं,
परमानंद अपार।।
परमानंद अपार,
रोचक कविताएँ।
लेख कहानी, चित्र विविध,
जो –ज्ञान बढ़ाएँ।।
वृद्ध, युवा, बाल
सब लाभ उठाएँ।
मंत्र मुग्ध हों, हर्षित हों,
सब दुःख भुलाएँ।।
कितना अच्छा हो संपादक भैया,
यदि यह देवपुत्र दैनिक बन जाए
एक मास का इंतजार यह,
हमें न भाए।

✻✻✻✻

✸ राजेन्द्र सिंह ठाकुर, भिण्ड (म.प्र.)

देवपुत्र पत्रिका कहानी, कविता, प्रसंग, बाल प्रस्तुति, मनोरंजक व ज्ञानवर्धक और सकारात्मक सामग्री के साथ प्रतिमाह पूरे भारत वर्ष में पहुँच रही है, हर अंक में नई नई जानकारी के साथ सम्पादकीय भी बहुत अच्छा लगता है। सम्पादक मंडल को साधुवाद।

✻✻✻✻

✸ बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान', गोरखपुर

देवपुत्र का अगस्त २०१८ का अंक पढ़ा। मुख्य पृष्ठ सुन्दर लगा। कहानियाँ, कविताएँ पढ़कर मन खुश हो गया। संपादकीय भी मनपसंद लगा। देवपुत्र को हमारे क्लब मित्र भी बड़े चाव से पढ़ते हैं। आप पत्रिका में लेखकों पूरे पते भी प्रकाशित करें। पुस्तक परिचय बहुत पसंद आता है।

|| बाल प्रस्तुति ||

डब्बू गीदड़

कविता : कृष्ण कान्त महते

डब्बू गीदड़ बनकर मेहमान
पहुंचे अपने दोस्त के घर,
किया स्वागत दोस्त ने खूब,
उनकी बाहों में भर-भर।
खाने को रखे सामने दोस्त ने
अखरोट बादाम प्लेट भरकर
लेकिन गीदड़ जी गए थे भूल
नकली दाँत अपने घर।
आखिर सूझ गया एक बहाना
काफी देर सोच सोचकर,
बोले डब्बू दोस्त से अपने
हूँ मैं तो आज उपवास पर।

• असवार (म.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) मारीच (२) अभिमन्यु (३) राजस्थानी राजपूतों का (४) असम
(५) कार्तिकेय (६) महाराजा जल्पेश्वर (७) विमान शास्त्र
(८) बिरसा मुण्डा (९) महाराणा कुंभा (१०) सरदार शामसिंह अटारी

सही उत्तर

आठ अंतर बताओ

(१) पेड़ों के बीच बादल गायब है (२) उसके पास के वृक्ष की शाखाएं कम हैं
(३) छोटी झाड़ी के दाँत गायब हैं। (४) उसके नीचे की झाड़ी गायब है। (५) बन्दर की पूंछ छोटी है।
(६) बन्दर की अंगुली कम है। (७) उसकी आँखों में अंतर है। (८) छोटी झाड़ी की आँखों में अंतर है।

चुटकुले

● ऋषिमोहन श्रीवास्तव

डाक्टर सा. एक व्यक्ति का ऑपरेशन करने जा रहे थे, तभी वह व्यक्ति बोला- डॉ. साहब एक मिनट रुकिए, और वह पेन्ट की जेब से बटुआ निकालने लगा।

डा. साहब बोले- फीस की चिन्ता क्यों करते हो। ऑपरेशन के बाद ले लूंगा।

व्यक्ति बोला- डा. साहब फीस की बात नहीं, मैं तो ऑपरेशन के पहले अपने रुपये गिन रहा था।

****

एक अधिकारी को शिकार का बड़ा शौक था वे शेर को मारने जंगल चल दिए। शेर कहीं नहीं दिखाई दिया, तो अपने एक साथी के साथ पेड़ के नीचे बैठ गए। तभी न जाने कहां से वास्तव में शेर आ गया।

तब साथी ने अपने दोस्त से कहा- शेर आ गया।

वर्मा जी बोले- कहा दो कल कार्यालय में आ जाए।

****

मालती (अपनी सहेली पूनम से)- तुम्हारी बेटी श्वेता की सगाई हुई एक साल हो गया शादी क्यों नहीं करती?

पूनम (मायूसी में)- क्या करूं बहन जी, लड़का वकील है जब भी शादी की तारीख आती है तो कोई न कोई आगे की तारीख बतला देता है।

****

गाइड (एक महल दिखलाते हुए) श्रीमान यहाँ पर उस जमाने के राजा की मौत हुई थी।

पर्यटक - मैं पिछली बार जब महल देखने आया था तब तुमने दूसरे हॉल में राजा की मौत बतलाई थी।

गाइड - क्या करूँ श्रीमान, उस हाल की तरफ जा नहीं सकते। वह अब खण्डहर हो गया है उसकी छत से पानी भी गिर रहा है।

● ग्वालियर (म.प्र.)

सही उत्तर

मनोरंजक चित्र पहेली

(१)

मुह १+५+४+२=१२,
कान २+७+३+१२,
गर्दन १, अगला पैर १+७+६+१+८+१+१+३=२८
कमर व पेट ३+१+७=११
पूंछ ३+७=१०
पिछला पैर ४+६+९=१९ कुल योग ९३ है।

(२)

कान खरगोश के, मुंह जेबरे का, धड़ हिरण का,
पूंछ चीते की, पांव हाथी के

सलिला ने आयोजित किया

राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन

सलुम्बर। संस्था सलिला द्वारा ७ और ८ अक्टूबर, २०१८ को नवम् राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन का द्विदिवसीय आयोजन इतिहास और संस्कृतिविज्ञ डॉ. राजशेखर व्यास, जयपुर के मुख्य अतिथि व वैज्ञानिक डॉ. कुन्दनलाल कोठारी की अध्यक्षता में १० राज्यों के शताधिक दिग्गज साहित्यकारों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

बाल साहित्यकार में यात्रावृत्तांत विषयक सत्र में बीज वक्तव्य संस्था अध्यक्ष डॉ. विमला भण्डारी ने दिया। समारोह में डॉ. व्यास को मेवाड़ गौरव अलंकरण से सम्मानित किया। समारोह में यात्रा वृत्तांत पर सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति देने वाले साहित्यकारों का पुरस्कृत भी किया गया तथा बाल साहित्य की १० पुस्तकें भी लोकार्पित की गईं। जिनमें डॉ. पंकज नीरवाल की 'उपहार और सोने का हार', डॉ. शील कौशिक की 'धूप का जादू', प्रबोध कुमार गोविल की 'मंगल ग्रह के जुगनू', प्रभा पारीक की रंग 'बिरंगी और झिगली-बिगली', दीनदयाल शर्मा की 'अपनी दुनिया सबसे प्यारी' और 'हम बगिया के फूल', सुधा जौहरी द्वारा अनूदित 'द वैली ऑफ कारगिल', शशि ओझा की 'गुलमोहर', ज्योस्त्ना सक्सेना की 'ठुमकते गीत', अंजीव अंजुम की 'डॉ. विमला भण्डारी की चुनिंदा बाल कथाए', 'बच्चों का देश' बाल पत्रिका का अक्टूबर अंक, संतोष कुमार सिंह की 'स्मार्ट फोन और दादाजी' सम्मिलित है।

तृतीय सत्र में श्री जितेन्द्र निर्मोही के मुख्य अतिथ्य में सर्वश्री रवि पुरोहित, आनंद स्वरूप श्रीवास्तव, वीणा अग्रवाल, रेखा लोढा, प्रभा पारीक, देवदत्त शर्मा, उद्धव भयवाल, श्यामप्रकाश देवपुरा, बलराम अग्रवाल, इन्द्रजीत कौशिक को सलिला साहित्य सम्मान प्रदान किए गए।

बच्चों की लेखन कार्यशाला, कवि सम्मेलन सहित विभिन्न सत्रों के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ। डॉ. विमला भण्डारी के कुशल मार्गदर्शन से यह आयोजन स्मरणीय बन गया।

ढूंढो तो जाने

● राजेश गुजर

बच्चो, यहाँ बिल्लियाँ एक जैसी दिख रही हैं, लेकिन इनमें २ जुड़वाँ एक जैसी हैं। आप ही ढूंढो कौनसीं हैं।

सही उत्तर

ज्यामिति पहेली

वर्ग- ८, चतुर्भुज ८ षट्भुज- १६

ढूंढो तो जाने

३ व ६

बड़ा छोटा

३, २, ८, ४, ९, ७, ५, ६, १०, १

अतिथि देवो भव

कहानी : कमलाप्रसाद चौरसिया

महात्मा इब्राहिम मुसलमानों के प्रसिद्ध आध्यात्मिक पूज्य पुरुष थे। वे दिन में खाने के समय किसी न किसी अतिथि को अपने साथ बैठाकर ही खाना खाते थे। यह उनका संकल्प था। दिन की अपनी दावत में वे बिना किसी अतिथि को खिलाए खाना नहीं खाते थे। उनके इस व्रत से लोग भली भाँति परिचित थे। अतः कोई न कोई अतिथि इस समय आ ही जाता था। एक दिन दावत का समय हो गया किन्तु कोई अतिथि नहीं आया। अतः अतिथि की तलाश में वह बाहर निकल पड़े। उनकी प्रबल इच्छा थी कि उन्हें कोई साधु महात्मा मिल जाए और वे उसे अतिथि बनाकर घर ले आएँ। जंगल में उन्हें एक वृद्ध नजर आया। वह अग्नि का उपासक था। फिर भी उसे अपने साथ ले आए।

भोजन तैयार था। खाने के लिए आमंत्रण और संबंधी भोजन के लिए बैठे हुए थे। उन्होंने उसे भी अपने साथ भोजन के लिए बैठा लिया। भोजन के पूर्व सबने परम्परानुसार प्रार्थना के लिए हाथ उठाए। आगन्तुक अतिथि वृद्ध ने हाथ नहीं उठाए। इस पर सब क्रुद्ध हो गए। उन्होंने उसे पंक्ति से उठकर बाहर चले जाने को कहा। वह बिना किसी उद्वेग के पूर्ववत् शान्तचित्त बाहर चला गया। वह मान अपमान से परिचित ही नहीं था, कहिए कि मान–अपमान से ऊपर उठ चुका था। अग्नि का उपासक था। जानता था 'अहं वैशवानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्न चतुर्विधं।' अर्थात परमात्मा प्राणियों के शरीर में वैश्वानर अग्नि के रूप में वास करता है, और अन्न को प्राण और अपान वायु के माध्यम से पचाता है। वह जिस अनासक्त भाव से आया था, उसी अनासक्त भाव से चला गया। उसे तिरस्कार का लेशमात्र भान नहीं था किन्तु महात्मा इब्राहिम मन ही मन अत्यंत व्यथित थे। वे अकेले संगत को अपने मन के भाव से अवगत नहीं करा सके। इस्लामी मान्यता के अनुसार संगत की दृष्टि में वह काफिर था और उनके साथ बैठकर नहीं खा सकता था। महात्मा इब्राहिम तो मानवता के पुजारी थे। उनकी दृष्टि में वह अग्नि का उपासक मात्र अतिथि था और सत्कार का अधिकारी था।

वृद्ध अतिथि के बाहर निकलते ही उन्होंने परमेश्वर की आवाज सुनी कि हे इब्राहिम ! मैंने तो उसे सौ वर्ष तक खाने के लिए अन्न और जीवन दिया है। तुझे उसे एक बार भोजन कराने में इतना एतराज हुआ। माना कि वह अग्नि का उपासक था और अग्नि द्वारा मेरी अभ्यर्थना करता है, किन्तु तूने इतने थोड़े से मतभेद के कारण अपनी दया का हाथ सिकोड़ लिया। महात्मा इब्राहिम को अपनी विरोध न करने की असमर्थता पर बहुत क्षोभ हुआ। अतिथि सेवा किसी जाती विशेष अथवा धर्म की मान्यताओं से प्रतिबंधित नहीं है। वह सदाचार का संवाहक और मानवता का

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१८

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१८** वर्ष २०१६ के पश्चात् प्रकाशित **बाल उपन्यास की पुस्तक हेतु** प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियां **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार** के नाम से **४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)** पर **३१, मार्च २०१९** तक प्राप्त होना चाहिए। **पुरस्कार स्वरूप ५०००/– की राशि** प्रदान की जाती है।

बाल साहित्यकारों से प्रविष्टि स्वरूप कृतियां सादर आमंत्रित हैं।

द्योतक है। अतिथि सत्कार किसी भी प्रकार की साम्प्रदायिक संकीर्णता को प्रश्रय नहीं देता। वह सर्वथा इंसानियत का पक्षधर और पोषक होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं– 'सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पूरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।''यज्ञ की व्यवस्था के साथ ही परमात्मा ने प्रजा की रचना की और कहा कि यह आपकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाला है।' भोजन भी एक यज्ञ है। अतिथि सेवा तो यज्ञ है ही। इसलिए भोजन करने के पहले उसे ईश्वरार्पित करने के लिए प्रार्थना करने का विधान है– 'ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।।' भोजन प्रजापति की देन है, ब्रह्मकर्म है। अतः उसी को अर्पित कर ग्रहण किया जाता है। वे तो मनुष्य को चेताते हुए कहते हैं कि 'यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः। भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।' ईश्वर को निवेदित कर जो अन्न बचता है, उसे खाने वाले समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं। केवल अपने पोषण के लिए खाने वाले पाप का ही भक्षण करते हैं। ज्ञात हो कि सभी धर्मों में इसका विधान है। सभी धर्म अतिथि सेवा को परमधर्म मानते हैं।

● भोपाल (म.प्र.)

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१८

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार' की स्थापना वर्ष २०१६ में की गई।
वर्ष २०१८ के लिए यह पुरस्कार भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बालों और किशोरों की भूमिका पर आधारित प्रसंग के लिए निश्चित किया गया है। आपकी रचनाएँ सादर आमंत्रित हैं।

कृपया ध्यान दें

- आपकी रचना बाल रचना हो एवं वह अप्रकाशित, अप्रसारित मौलिक हो, इसे आप स्वयं प्रमाणित करके भेजें।
- रचना हिन्दी भाषा में हो। (अनूदित रचनाएं न भेजें।)
- रचना हमें ३१ मार्च २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो।
- लिफाफे पर 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१८ हेतु' अवश्य लिखें।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार देवपुत्र को होगा। जो किसी विशेषांक या स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी संभव है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाकारों को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००/- रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

रचनाएं ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर भेजिए।

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१८

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड एवं अपना मोबाइल नं. अवश्य लिखें। आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें–

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१८
देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

देवपुत्र गौरव सम्मान - श्री द्विवेदी को

इन्दौर। बाल साहित्य जगत का निजी क्षेत्र का प्रतिष्ठित "देवपुत्र गौरव सम्मान" इस वर्ष सुविख्यात बाल साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना, बिहार) को प्रदान किया जाएगा। श्री द्विवेदी ने प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य की विविध विधाओं में बच्चों के लिए उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है साथ ही उनकी बाल साहित्येतर साहित्य साधना भी उत्कृष्ट कोटि की है। आप आज भी निरंतर साहित्य सृजन में संलग्न है। आपकी शतधिक प्रकाशित कृतियों एवं अनेक पुरस्कारों व सम्मानों से गौरवान्वित आपके व्यक्तित्व कृतित्व पर अनेक शोधकार्य सम्पन्न हुए हैं।

ज्ञातव्य है कि देवपुत्र द्वारा प्रतिवर्ष किसी श्रेष्ठ बाल साहित्यकार को उनके समग्र अवदान पर देवपुत्र गौरव सम्मान प्रदान किया जाता है। सम्मान स्वरूप ३५०००/- पैंतीस हजार रुपए सम्मान निधि के साथ प्रशस्ति पत्र, शाल एवं श्रीफल प्रदान किया जाता है। देवपुत्र के प्रधान सम्पादक और सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना ने बताया कि यह सम्मान शीघ्र ही एक भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा।

प्रताप सम्मान हेतु प्रविष्टि आमंत्रित

क्रांतिकारियों पर प्रचुर लेखन करने वाले कविश्रेष्ठ पं. छोटेलाल पाण्डेय (सतना) द्वारा क्रांतिकारियों पर काव्य सृजन को प्रेरित करने हेतु इस वर्ष भी प्रताप सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई है। प्रविष्टि स्वरूप क्रांतिकारियों पर लिखी कविताएं दिनांक ३१ मार्च, २०१८ तक प्रताप सम्मान २०१८ के नाम से देवपुत्र ४०, संवाद नगर, इंदौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर सादर आमंत्रित हैं।

सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर पुरस्कार -

- प्रथम पुरस्कार २१००/-
- द्वितीय पुरस्कार १५००/-
- तृतीय पुरस्कार ११००/-

म.प्र. का नं.-1 संस्थान
AN ISO 9001:2015 Certified Academy
फोर्स
DEFENCE ACADEMY
INDORE
Army
Navy
Airforce
NDA
CDS
AFCAT
SSB
MNS
BSF, CRPF
MP POLICE
Priyanshu Tiwari
Navy 2018
DHARMENDRA PARMAR
AIR-FORCE
TUSHAR VERMA
RECOMMENDED- NDA 2018
All India 17th Rank in TES
JAYESH PATEL
Joined NDA 2018
SARTHAK VYAS
Recommended TES-2018
Physical
Written & SSB
Force Defence Academy has been the pioneer in placing large number of aspirants in Airforce, Navy, Army & NDA since its Establishment in 2015. Within the short span of time, the academy has proved its mettle in imparting specialized and intensive training in academic, physical, extra and co-curricular activities for all-round excellence of the student.
NDA चयनित विद्यार्थी जयेश पटेल
को बाईक की चाबी भेंट करते हुए
परमवीर चक्र
ग्रेनेडियर श्री योगेन्द्रसिंह यादव
9th 10th 11th & 12th के साथ
NDA की तैयारी करें और Army, Navy
एवं Airforce में ऑफिसर बनें।
संस्थान
का स्वयं का
हॉस्टल
डिफेंस फोर्सेस की तैयारी
हेतु सर्वश्रेष्ठ संस्थान
कर्नल मनोज बर्मन सर के
मार्गदर्शन में SSB Interview
की तैयारी करें एवं
सेना में अधिकारी बने ...
पेट्रोल पम्प के सामने, सेन्ट्रल बैंक के उपर,
साजन नगर, नवलखा, इन्दौर
Call : 98260-49151, 9691837948
Email : forcedefenceacademy@gmail.com
www.forceacademyindore.com
कर्नल मनोज़ बर्मन सर

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० | प्रेषण तिथि: प्रत्येक माह की ३० तारिख, आर.एम.एस., इन्दौर | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अवश्य देखें

www.devputra.com

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. (प्रति सदस्य)

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।
- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना